श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका

श्री कल्कि भजन संग्रह

अंक 8, अगस्त 2021, कुल पृष्ठ 118

वार्षिक शुल्क वालों के लिए मूल्य मात्र 10 रुपए

मंगल भवन अमंगल हारी कल्कि नाम सदा सुखकारी*

फ्री रिकार्डिंग उपलब्ध सुश्री नेहा चौधरी 978496244

जय कल्कि जय जगत्पते।
पद्मापति जय रमापते॥

पंडित मनोकांत तिवारी

मनोकांत जी द्वारा रचित भजनों का अद्भुत संग्रह जो चमत्कारिक रूप से फल प्रदान करता है

* कुंए भी खाली हो जाते हैं पृष्ठ सं. 6

मूल्य 50 रू/-

मत कर अभिमान रे हिंदू

पृथ्वीराज चौहान यदि क्षत्रियता के अहंकार/आत्मघाती भावुकता को नहीं अपनाते और धर्मिष्ठ होते हुए पहली बार मौहम्मद गौरी का विध्वंस कर देते तो मुगल 900 साल तक भारत को गुलाम न बनाते *

महाराणा प्रताप-गुरु गोविंद सिंह-शिवाजी के बाद जब अंग्रेजों ने भारतवासियों को लाल गेहूँ खाने को दिए जो वह अपने देश में जलाते या समुद्र में फेंकते थे।

यह जानकर कि भारतवासी तो बहुत सहनशील हैं तो अंग्रेज भारतीयों को कपड़ा भी नाप-नाप कर देने की योजना जैसे ही चालू करने जा रहे थे तब हिंदू जाति और धर्म के सर्वनाश की ऐसी भयानक योजना देखकर हिरण्याक्ष को मारकर प्रहलाद को बचाने वाले श्री महाविष्णु ने कल्कि अवतार लेने का मन बनाकर चारों युगों में बने रहने वाले श्री हनुमान से कल्कि नाम का उद्घोष करवाया। इसको रामकृष्ण परमहंस के अवतार पंडित लक्ष्मीनारायण जी ने आने वाले कल के लिए लिखित रूप में दिया।

* देखें पृ.3

ऐसे महाविष्णु ने श्री हनुमान जी से कल्कि अवतार का उद्घोष करवाया

* अब छोटा हो या बड़ा जो भी कल्कि का काम कर रहा है वह ऑप्टिकल फाइबर है

जागो हिंदू जागो

त्रेता के राम द्वापर के कृष्ण कलियुग में कल्कि रूप में क्या मुसलमानों और इसाईयों के लिए आएंगे?

हिंदूओ को मुगलों का अतिथि देवो भवः महंगा पड़ा- मुगलों ने हमारी बहू बेटियों से वंश की, नीतिज्ञ राजाओं से राज्य की, वीर सेनापतियों से फौज की वृद्धि की।

ऐसे ही मुगलों को भारत में अंग्रेजों का अतिथि देवो भव महंगा पड़ा और हिंदुओं के साथ वह भी 150 साल अंग्रेजों के गुलाग रहे।

अंग्रेजों ने भी सोची-समझी साजिश के तहज छोटे वर्ग के गरीब हिंदू समुदाय को धन, नौकरी, मकान आदि से इसाई धर्म में परिवर्तित करवाया। यहाँ तक कि ज्यादा बच्चे पैदा करके सम्मान पाने के जूनून में ट्रेसी नाम की एक नर्स ने अपनी जान गंवाई। आभार- नवभारत टाइम्स 20.12.2017

परिणामस्वरूप आज विश्व में 80 देश इसाईयों के और 56 देश मुसलमानों के हैं। सिर्फ भारतवर्ष ही एक हिंदू देश बचा है जिसे मुस्लिम और इसाई बनाने की पुरजोर कोशिश की जा रही है।

सिर्फ भारतवर्ष ही एक हिंदू देश

जिसे मुस्लिम और इसाई बनाने की पुरजोर कोशिश की जा रही है

हम कर्जदार हैं अपने पुरखों के जिन्होंने 900 वर्ष मुगलों (मुसलमानों) से 200 वर्ष अंग्रेजों (इसाईयों) से लोहा लेते हुए हमें हिंदू बनाए रखा

कर्मभूमि भारत में आपका जन्म आपके सौभाग्य की गाथा गाता है क्योंकि......

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने। यतो हि कर्मभूरेषा ह्यतोअन्या भोगभूमयः॥

अत्रा जन्मसहस्त्राणां सहस्त्रैरपि सत्तम। कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्यसञ्चयात॥

—श्लोक 22-23 द्वितीय अंश तीसरा अध्याय विष्णु पुराण

जम्बूद्वीप में भारतवर्ष सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि यह कर्मभूमि है। इसके अतिरिक्त अन्यान्य देश भोग भूमियां है। जीव को सहस्त्र जन्मों के अनंतर महान पुण्यों का उदय होने पर ही इस देश में मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। किए गए कर्मों का संचय व क्षय मात्र इसी कर्म भूमि पर संभव है। जबकि भोग भूमि पर कर्मों का संचय व क्षय नहीं होता है। जीवात्मा को जन्म किस भूमि पर प्राप्त हो यह उसके कर्मों के आधार पर ही निर्धारित होता है।

......पृष्ठ 2 से आगे

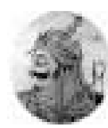

पृथ्वीराज चौहान

* सन 1191-1192 में पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी के बीच यहीं पर 18 बार युद्ध हुआ था। आखिरी लड़ाई में पृथ्वीराज जयचंद ने भीतरधात किया और वह मोहम्मद गौरी से जा मिला। नतीजतन इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हार का सामना करना पडा।

अधिक जानकारी के लिए इस लिंक पर जाए https://www.gyandarpan.com/war-between-prithviraj-chauha-and-mohmmad-ghori/

अखंड भारत

वाराणसी स्थित भारत माता के मंदिर में अखंड भारत का नक्शा

अखंड भारत, भारत के प्राचीन समय के अविभाजित स्वरूप को कहा जाता है। प्राचीन काल में भारत बहुत विशाल था जिसमें अफगानिस्तान पाकिस्तान, तिब्बत, भूटान, म्यांमार बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल आते हैं इतना ही नहीं भारत के साम्राज्य में मलेशिया, फिलीपींस, थाईलैंड , वियतनाम, कंबोडिया, इंडोनेशिया, ईरान आदि भी सम्मिलित थे। वृहद भारत में मध्य एशिया व चीन के भू-भाग को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

इस प्रकार पश्चिम में वृहद भारत की सीमा फारस (ईरान) की सीमा में हिंदू कुश एवं पामीर पर्वतों (पामीर पर्वत हिमालय के जंक्शन पर मध्य एशिया, दक्षिण एशिया और पूर्वी एशिया के बीच एक पर्वत श्रृंखला है) तक जाएगी। हिंदूकुश पर्वत माला पामीर पर्वतों से जाकर जुड़ते हैं और हिमालय की एक उपशाखा माने जाते हैं।

अट्ठारह सौ सत्तावन (1857) की क्रांति के बाद ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिल गई उन्हें लगा कि इतने बड़े भूभाग का दोहन एक केंद्र से करना संभव नहीं है अतः उन्होंने फूट डालो राज करो की नीति अपनाई और भारत को अनेकानेक छोटे-छोटे हिस्सों में बांट दिया इतना ही नहीं अंग्रेजों ने यह भी सुनिश्चित किया कि कालांतर में भारतवर्ष पुन्हा अखंड ना बन सके।

हैरानी की बात यह है की पूरी दुनिया के अंदर भारत एकमात्र ऐसा देश है, जिसमें से अलग होकर 15 देश बने।

वाराणसी स्थित भारत माता के मंदिर में भारत का 100 साल पुराना नक्शा है जो अखंड भारत के पर्वतों मैदानों और महासागरों को दर्शाता है अधिक जानकारी के लिए आप इस लिंक पर जा सकते हैं।

https://hindi.webdunia.com/sanatan-dharma-history/akhand-bharat-119081300052_1.html
https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A5%83%E0%A4%B9%E0%A4%A6_%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4
https://hindi.webdunia.com/sanatan-dharma-history/bharat-vibhajan-119081300060_1.html
https://studypillar.in/akhand-bharat/

1. ब्रह्मवैवर्त पुराण से पता चलता है कि अखंड भारत में माँ सती के 64 शक्तिपीठ थे, जिसमें शामिल है वर्तमान समय का भारत, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, तिब्बत और पाकिस्तान।

2. अखंड के जब खंड - खंड (टुकडें) हुए तो उसने 15 देश को जन्म दिया

वहीं अखंड भारत ऐसे टूटते-टूटते इतना छोटा रह गया ➡

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र
साहित्य पैनल सुश्री रमणी अग्रवाल
(7011525174)

कुएं भी खाली हो जाते हैं

प्रिय बंधुओं नीचे दी हुई रिकार्डिंग श्री कल्कि समाज और संस्था के सहयोग से तैयार की गई है। अभी भी यह उच्च श्रेणी के गायक और गायिकाओं द्वारा बेहतरीन स्टूडियों में रिकार्डिंग में संलग्न है। दु:ख निवारण-विषम परिस्थितियों में घिरे सनातन धर्मी विशेषकर कल्कि समाज जो घर और नौकरी व्यापार में कुछ अनचाही चीजों से व्यथित/तनाव ग्रस्त है।

नज़र: मैं नहीं तो सामने वाला क्यों आगे बढ़ रहा है ? ऐसी नज़रें जिससे शीशे तक चटक जाते हैं। वर्षों से घर में डिपी बैठी रूहें बिल्ली,सर्प रूपी राक्षसी शक्तियां जोपुराने वस्त्रों में,उपकरणों में छिपकर बैठ जाती हैं और सब कुछ होते हुए भी मनुष्य को आगे नहीं बढ़ने देती। हमारे मन में क्रोध,कलेश,तनाव,और अशांति का वातावण बनाए रखती हैं। भगवान श्री कल्कि का यह अनुभवगम्य तार है। उन्हीं अनुभवों के हिसाब से यह शास्त्रोक्त रिकार्डिंग सनातन कल्कि समाज के लिए ₹50 प्रति रिकार्डिंग से उपलब्ध करा रहा है। ताकि अच्छे म्यूज़िक डायेक्टरर्स और समय समय पर स्टूडियोज़ में चल रहे हमारे काम पैसे की वजह से न रूके।

फिर भी आप फ्री में लेना चाहते हें तो हमारी प्रोजेक्ट इंचार्ज से कह दीजिए आप इसे अपने 5 ईष्ट मित्रों अथवा मंदिर में सुपात्रों को दे देगें जो आपकी तरह से बिना वजह परेशान हैं। विश्वास करें आपका यह सहयोग हमारे लिए 50 ₹ से भी ज्यादा कीमती रहेगा। क्योंकि उसके बदले हमें भगवान श्री कल्कि हमें कहीं से भी अग्रोहा धाम की तरह धन उपलब्ध कराते रहेंगें।

अभी उपलब्ध रिकार्डिंग:

1.मंगल भवन अमंगल हारी कल्कि नाम सदा सुखकारी (9831273015)
2.विष्णु के अवतारी ये कल्कि भगवान है यही हमारे राम है यही हमारे श्याम (9831273015)
3.आज से लगभग 9 लाख वर्ष पूर्व रामावतार में महर्षि अगस्त्य द्वारा लिखित भगवान श्री कल्कि के 1,000 (सहस्त्र नाम) मंत्र (9831273015)
4.माँ बगुलामुखी माँ के 108 बीज मंत्र (9831273015)
5.प्रस्तुत पुस्तक व अन्य भजन (7011325174)
6. संक्षिप्त श्री कल्कि पुराण ऑडियो (7011325174)
7.3 से 12 वर्ष के बच्चों द्वारा ऑडियो / वीडियो नृत्य व प्रेरणादायक नाटिकाएं (9136377829) (9163448228)
8.महामंत्र ध्यानयोग्य मुद्रा हेतु (9711789287)
9.सत्संग सुधा (7011325174) आदि

विशेष: स्टूडियों में कार्यरत जो हमारी नई रिकार्डिंगस आ रही हैं मालूम करके ले सकते हैं।
रिकार्डिंग प्रभारी सुश्री-नेहा चौधरी (कोलकाता)(9748496244)(9831273015)
संतुष्ट न होने पर मामाजी (9654488264)(8240202430)

भगवान श्री कल्कि की धूम
महीने में 26 दिन डिजिटल वर्ल्ड में

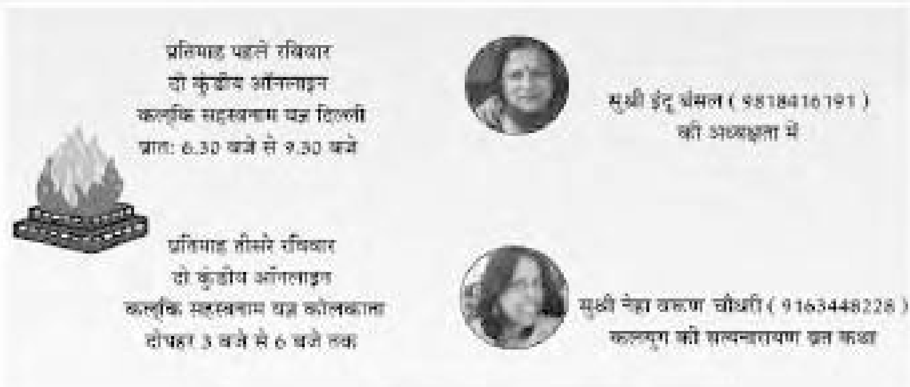
प्रतिमाह पहले रविवार
दो कुंडीय ऑनलाइन
कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ दिल्ली
प्रातः 6.30 बजे से 9.30 बजे
सुश्री इंदु बंसल (9818416191)
की अध्यक्षता में
प्रतिमाह तीसरे रविवार
दो कुंडीय ऑनलाइन
कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ कोलकाता
दोपहर 3 बजे से 6 बजे तक
कलयुग की सत्यनारायण व्रत कथा

प्रोजेक्ट प्रभारी
श्री विपुल गुप्ता
सुश्री सुधा रानी गुप्ता
सुश्री रीमा गुप्ता

जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा संतसमाज का आवाह्न भगवान श्री कल्कि को मंदिरों में प्रतिष्ठित करके उनसे सत्युग सहित प्राकट्य की प्रार्थना करें

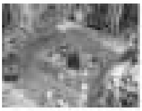
काशी विश्वनाथ अक्षयवट बनारस

गीताश्रम, ऋषिकेश उत्तराखंड

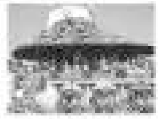
दानघाटी मंदिर, गिरिराज जी गोवर्धन

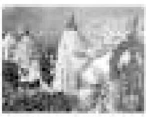
बैजनाथ धाम में भगवान श्रीकृष्ण के अवतार

गौरी शंकर मंदिर चांदनी चौक दिल्ली

मां ललिता मंदिर नैमिषारण्य तीर्थ

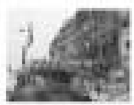
बड़ी शीतला मां मंदिर दशाश्वमेध घाट वाराणसी

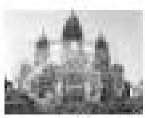
कालका जी मंदिर, नई दिल्ली

5 फरवरी 2017 को योगी आदित्यनाथ जी द्वारा गोरखपुर में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना के मात्र 49 दिनों बाद 26 मार्च 2017 को योगी आदित्यनाथ उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुए।

5 फरवरी 2017 को सांसद योगी आदित्य नाथ [illegible] मंदिर [illegible] के [illegible] भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना के उपरांत आरती करने के बाद दिल्ली से गए भक्तों के साथ चर्चा करते हुए एवं [illegible] (जिनके अथक प्रयासों से यहाँ कल्कि जी की मूर्ति स्थापना हुई)

गूगल के नक्शे पर भगवान श्री कल्कि के मंदिर

दिल्ली	- 81
उत्तर प्रदेश	- 46
कोलकाता	- 25
उत्तराखंड	- 17
हरियाणा	- 14
राजस्थान	- 08
नेपाल	- 04
बिहार	- 04
मध्य प्रदेश	- 03
मुम्बई	- 02
हिमाचल	- 03
पंजाब	- 01
जम्मू	- 01
उड़ीसा	- 01
सिक्किम	- 01
छत्तीसगढ़	- 02
झारखंड	- 01
मेघालय	- 01
गुजरात	- 01

अवतार शंकर और ब्रह्मा के नहीं सिर्फ महाविष्णु के होते हैं

महाविष्णु का चौबीसवाँ अंतिम एवं प्रमुख में दसवाँ अवतार भगवान श्री कल्कि

महाविष्णु के चौबीस अवतार

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत:
अभ्युत्थनां अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं।
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्,
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

गीता अध्याय 4 श्लोक 7-8

जब-जब होइ धर्म कै हानी। बाढ़हिं
असुर अधम अभिमानी।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं
कृपानिधि सज्जन पीरा।।

रामायण बाल कांड चौपाई 120

भक्त प्यारे हैं उन्हें धर्म प्यारा है उन्हें भक्तों
ने ही तो जमीं पे उतारा है उन्हें
देख सकते वो कभी भक्तों को मजबूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार के दिन दूर नहीं

महाविष्णु के 24 अवतारों में से
प्रमुख दस अवतार

1.वाराह 2.कच्छप 3.मत्स्य
4.कूर्म 5.नृसिंह 6.वामन
7.राम 8.कृष्णा 9.बुद्ध
10.कल्कि

अब होंगे नव निर्माण
खूब सजेंगे कल्कि जी के मंदिर

ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के अवतार महर्षि लक्ष्मीनारायण जी

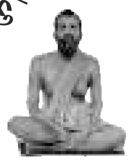

श्री कल्कि विष्णु मंदिर
869, कुंडे वालान
सीता राम बाजार दिल्ली-110006
की तपोस्थली

रामकृष्ण परमहंस **महर्षि लक्ष्मीनारायण जी**

—स्वप्नानुभव रमणी अग्रवाल (9212216251)

(मुझे 24 जुलाई शनिवार 2021 को अनुभव गोष्ठी में, संस्कार उपवन पल्ला गाँव की जगह श्री गुरू जी की तपोस्थली में दो कुण्डीय सहस्त्र नाम यज्ञ करने के लिए मामाजी ने मेरे अनुभव का अर्थ बताते हुए कहा। मुझे दिनांक 25-7-2021 (गुरू पूर्णिमा) को तपोस्थली में हवन करने के बाद अनुभव आता है-

गुरू जी की तपोस्थली जहाँ पर अभी प्राचीन कच्चा घर बना है अनुभव में दिखता है कि वहाँ नव निर्माण हो गया है। मार्बल की सफेद दीवारें नए रंग-रोगन के साथ एकदम चमक रही हैं। फर्श भी एकदम *पक्का* बन गया है। हॉल में एयर कंडीशनर लग गए हें। कमरे में जो गुरू जी की एक बड़ी सी तस्वीर लगी है वह भी लगी हुई है। उसी कमरे में मेरी पीहर की *मम्मी* सुश्री संगीता गर्ग और मेघा दीदी दोनों वहाँ थक कर मानो बहुत काम करके आकर लेटी हुई एयर कंडीशनर की हवा में एकदम शांति महसूस कर रही हैं। श्री गुरू जी की फोटो के पास मामाजी बैठे हुए (जहाँ पहले भी मैंने सपरिवार हवन किया था) हैं। मामाजी श्री गुरू जी की 45 भजनों वाली किताब में से कोई भजन पढ़ रहे हैं।

फिर दिखता है कि मैं और मेघा दीदी मामाजी के घर गए है और मामाजी उसी गुरू जी वाली जगह पर बैठे हैं। मेघा दीदी मामाजी के घर रसोई में रोटियां सेंक रही हैं। मैं भी मामाजी के घर पर हूँ और अपनी *मम्मी* को कहती हूँ कि चलो चलकर मामाजी को वहाँ से ले आते हैं। इतने में मेघा दीदी रोटी सेंकते हुए बाहर आती हैं और कहती है रहने दो मैंने मुकेश जी (मेघा दीदी के पति) को मामाजी को लाने भेज दिया है।

मैं मन में सोचती हूँ कि मेघा दीदी सारा काम इतने अच्छे ढंग से एडवांस में करके चलती हैं।

अर्थः **यह सर्वसाधारण तपोस्थली नहीं गूंगे का गुड़ है।** श्री कल्कि समाज जन यहाँ से अनेकोंनेक मनवांछित *शक्तियां* ले रहे हैं और लेकर जाएंगे।

संस्कार उपवन पल्ला गाँव लावण्या बैंक्वट के बराबर दिल्ली में कमरों एवं शौचालय का निर्माण एवं एक किलोमीटर दूर गौशाला

क्या आप भी राजा रानी बनना चाहते हैं?

तो आएं अन्य राजा रानियों की तरह आप भी ऐसे चमत्कारी महाविष्णु भगवान श्री कल्कि की मूर्ति लगाने का विचार बनाइए और पाइए अन्य राजा रानियों की तरह अपने जीवन में भी आए प्रतिदिन बदलाव।

हनुमान जी श्री कल्कि वालों के गुरू

हनुमान जी हमारे आदि गुरू हैं, ''हक अनीह निष्कलंक गौरंडाः (गौरंडाह्) दुष्टाः नाशनम् पापहा'' कल्कि समाज का आदि मंत्र है

गुरू बालमुकुंद जी

आदि गुरू हनुमान जी के बल और शौर्य को अपने अंदर समेटे हुए कल्कि भक्तों के गुरू श्री बालमुकुंद जी हैं।

आज इस तथ्य से पूरा कल्कि समाज अवगत है कि कल्कि भक्तों के आदि-गुरू हनुमान जी हैं जिन्होंने गुरू बालमुकुंद जी के रूप में कलियुग के साम्राज्य में सर्व प्रथम अपने आराध्य श्री राम एवं श्री कृष्ण के कल्कि रूप में अवतरण की लीला का उद्घोष किया।

गौ माता के रोम रोम का बदला लेने हेतु
आए हैं श्री कल्कि हरि, सत्य धर्म के सेतु

गुरू बालमुकुंद जी ने अपने समकालीन दिव्य मनुष्य(जो दैवी जगत से भगवान श्री कल्कि के अवतार कार्य करने के लिए भेजे गए थे) को भगवान श्री कल्कि के प्राकट्य हेतु पूजा,मंत्र,जाप एवं आराधना की दीक्षा प्रदान की। **गुरू जी एक तेजवान संत और भक्त थे, जो नित्य कल्कि नाम का जाप और पूजन करते थे। उनसे मिलते ही लोगों को हनुमान जी की अनुभूति होती थी।** हर व्यक्ति की समस्या का वो एक ही समाधान देते थे-श्री कल्कि भगवान का भजन करो, कल्याण होगा। उनसे मिलने आने वाले श्रद्धालु अपने आप कल्कि भगवान की जय कहकर उनका अभिवादन करते थे। अपने जानने वालों के बीच उन्हें गदाधारी पंडित के नामसे प्रसिद्धि मिली हुई थी। गुरूवर बालमुकुंद जी ने तकरीबन 1904 में महर्षि लक्ष्मी नारायण जी को कल्कि भगवान का नाम दिया।

गुरूवर बालमुकुंद जी के प्रारंभिक वर्षः- गुरू जी का जन्म लगभग 1854 में उत्तर प्रदेश के बिलासपुर गाँव में हुआ। एक दिन वह अपने घर के प्रांगण में खड़े मुद्गर घुमा रहे थे तभी जामवंत** स्वरूप एक श्यामवर्णी महात्मा वहाँ

आए और उनसे कहा, अरे अंजनी मैया के लाल यहाँ क्या घुमा रहे हो? गदा धारण करो इंद्रप्रस्थ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।

(**रामावतार में समुद्र पार कर लंका जाने में जब हनुमान जी अपने आप को असमर्थ पा रहे थे, तब जामवंत जी ने हनुमान जी को विस्मृत उनकी अपार शक्ति का ज्ञान करवाया था)

तभी गुरू जी अपना मकान, खेत-खलिहान सब कुछ छोड़कर अपनी माता एवं पत्नी को लेकर दिल्ली(इंद्रप्रस्थ) आ गए और यमुना जी के घाट पर ठहर गए। तत् पश्चात एक सज्जन की सहायता से वह कूचापाती राम की नई बस्ती में रहने लगे। **भगवान श्री कल्कि की प्रथम पुकार और प्राकट्य के आरंभ का प्रयास उन्होंने यहीं से किया।** उनके घर के बाहर एक नगाड़ा रखा रहता था। ठीक दोपहर के समय उसे बजाते हुए वह यह गीत गाते मानो अलख जगाते थे:-

''आवन आवन कह गए जी तुम कर गए कौल अनेक
गिनत गिनत दिन हे मेरे स्वामी, घिसी उंगलियों की रेख''

इस तरह वे शेष शैय्या निवासी भगवान महाविष्णु से कल्कि रूप में प्राकट्य होने हेतु गुहार लगाते थे।

<u>आलौकिक घटना जिससे बालमुकुंद जी के अंदर रूद्रांश हनुमान जी की शक्ति की जागरण प्रक्रिया आरंभ हुई:-</u>

उन दिनों एक विलक्षण घटना घटित हुई। एक महानुभाव मंगलवार के दिन अपने पास के मंदिर में हनुमान जी को चोला चढ़ाकर उनका पूजन कर रहे थे तभी उनके कानों में आवाज़ आई ''हनुमान जी तो नई बस्ती में साक्षात बैठे हैं'' तब वह व्यक्ति तुरंत चमेली के तेल में सिंदूर घोलकर, माला प्रसाद आदि लेकर बालमुकुंद जी के पास जा पहुँचे। श्री बालमुकुंद जी उस समय वीरासन की मुद्रा में बैठे हुए आँखें बंद कर जप कर रहे थे। उस व्यक्ति ने गुरू जी के मस्तक हाथ और पैरों में सिंदूर का लेपन कर माला पहना दी। और इस प्रकार हनुमान जी के रूप में गुरू जी को प्रथम चोला चढ़ा एवं अभिषेक हुआ। इस आलौकिक घटना के बाद ही गुरूजी में हनुमान जी की शक्ति पूर्ण रूप से जागृत होने की प्रक्रिया शुरू हुई।

<u>यह देव दुर्लभ समाधि है इसके बारे में मैंने सुना अवश्य है पर देखा आज ही है</u>

चोला चढ़ाने के उपरांत श्री गुरू बालमुकुंद जी ने अचानक अपने नेत्र खोले तो उन नेत्रों से बरसते तेज को देखकर वह व्यक्ति डर कर भाग गया। इसी वीरासन मुद्रा में घण्टों बालमुकुंद जी बैठे रहे, आँखें खुली हुई, पुतली ठहरी हुई,पलकें तक नहीं झपक रही थी। अनहोनी की आशंका से उनकी वृद्ध माता डर गई और चीखने चिल्लाने लगी। तत्काल ही आस पास बहुत से लोग एकत्रित हो गए। वैद्य जी को बुलाया गया। उन्होंने कहा मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, छाती में धड़कन तो है किंतु नाड़ी का कुछ अता पता नहीं है। फिर वह वैद्य जी अपने गुरू जी को बुलाकर लाए। उन बड़े वैद्य जी ने बालमुकुंद जी का परीक्षण करके कहा,''यह देव दुर्लभ समाधि है। इसके विषय में मैंने सुना अवश्य है पर देखा आज ही है। इसमें किसी औषधि की जरूरत नहीं है। श्री हरि नाम का संकीर्तन कीजिए।

यह समाचार पूरे मोहल्ले में आग की तरह फैल गया। दर्शन करने वालों का मेला लग गया। कई घण्टें बीत गए, वैसी ही वीरासन की मुद्रा वैसी ही निष्कंप पलकें पुतली ठहरी हुई होंठ बंद। इस दुर्लभ घटना के साक्षी कई और वैद्य वहाँ आकर बैठ गए। सभी वैद्यों के मस्तिष्क पर चिंता की रेखाएं उभरने लगी। तब सर्व सम्मति से यह निर्णय लिया गया कि इनका अभिषेक किया जाना चाहिए। वहाँ एकत्रित लोग लोटे, कलश इत्यादि लाकर गुरू जी पर जल चढ़ाने लगे। गुरूजी का दो घंटे तक अभिषेक किया गया तब कही जाकर गुरू जी में पूरे 14 घण्टें पश्चात् चेतना आई। चैतन्य होते ही वह एकदम हनुमान जी की भाँति उछलकर खड़े हो गए और किलकारी मारकर तेज गति से यमुना जी की ओर दौड़ने लगे। वहाँ एकत्रित लोग भी उनके पीछे तेज़ गति से दौड़े लेकिन कोई भी उनकी गति को नहीं लांघ पा रहा था। 14 घण्टें की देव दुर्लभ समाधि से जागने के पश्चात, हनुमान जी की गति से दौड़ते समय जो शब्द सर्व प्रथम उनके मुख से मंत्र के रूप में उद्घोषित हुए वह एक मंत्र था–

''हक अनीह निष्कलंक गौरंडा: (गौरंडाह्) दुष्टा: नाशनम् पापहा''

इस दुर्लभ समाधि के बाद गुरूवर बालमुकुंद जी के आचरण में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। पहले वह निरंतर जप व पूजन करने वाले संत थे, लेकिन अब वे एक अत्यंत शक्तिशाली प्रहारक क्षमता के स्वामी हिंदू धर्म का अलख जगाने वाले तेजवान योद्धा बन गए थे। इसके पश्चात उन्होंने कई सराहनीय व साहसिक कार्य, हिंदू धर्म की रक्षा व मलेच्छों का नाश करने हेतु किये।

''हक अनीह...'' आदि मंत्र का जप करते हुए गुरू जी के अत्यंत साहस भरे विलक्षण कार्यः कुछ उदाहरण–

1)सर्व प्रथम गुरू बालमुकुंद जी द्वारा भगवान श्री कल्कि के सामूहिक कीर्तन का प्रारंभ:–

जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर गदा घुमाते हुए'बालमुकुंद जी

एक बार वह यमुना नदी से स्नान करके आ रहे थे तब उन्होंने जामा मस्जिद से मुसलमानों के अज़ान की आवाज़ सुनी। उस समय वे अपने पास गदा रखने लगे थे। वे दौड़कर जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर चढ़ गए और पूरी मस्जिद में यमुना जी का जल छिड़कते हुए और गदा घुमाते हुए''हक अनीह निष्कलंक गौरंडाः (गौरंडाह्) दुष्टाः नाशनम् पापहा'' का ज़ोर से उद्घोष करने लगे। नमाजी मुसलमान उन्हें मारने दौड़े। लेकिन उनकी उग्र हुंकार सुनकर कोई भी उनके समीप नहीं आया। फिर उनके जानने वाले हिंदू साथी वहाँ इकट्ठे हुए और उन्हें शांत कर मस्जिद से वापिस लाए।

इस घटना के बाद श्री बालमुकुंद जी के साथियों ने सूझ बूझ से काम लेते हुए यह मन बना लिया कि वे बालमुकुंद जी के यमुना स्नान से वापिस आते समय उन्हें अकेला नहीं छोड़ेंगे, ताकि उनकी प्रचंड उग्रता किसी बड़े हिंदू–मुस्लिम विवाद का कारण न बन जाए। बहुत सारे भक्त उन्हें घेरकर श्री कल्कि के नाम का कीर्तन करते हुए चलते थे। उस समय की प्रसिद्ध पुकार भरी धुन थी

''अब निष्कलंक बन आजा, अब निष्कलंक बन आजा
भार भरी भारतभूमि का सारा कष्ट मिटा जा
भार भरी इस देव भूमि से गौ वध पाप हटा जा॥''

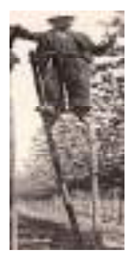

नकली जिंन्न के रूप में पाखंडी मुसलमान

<u>कैसे गुरू जी ने इंद्रप्रस्थ नगरी को मुसलमान षड़यंत्रकारियों के भय से मुक्त किया:–</u>

मुसलमानों के बीच मे गुरू बालमुकुंद जी चमत्कारी पुरूष के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। उन दिनों कुछ पाखंडी मुसलमान जामा मस्जिद के इलाके में लकड़ी का पैर लगाकर और सफेद लबादा पहनकर जिन्न का वेष धरकर रात में हिंदुओं को डराकर लूटते और उन्हें चोट पहुँचाते। पूरे इलाके में दहशत फैल गई कि यहाँ भूत आते हैं। गुरू जी उनका पाखंड भांप गए। एक रात''हक अनीह निष्कलंक गौरंडाः

(गौरंडाह्) दुष्टा: नाशनम् पापहा'' मंत्र का उद्घोष करते हुए गुरू जी उनके बीच पहुँच गए और उनका छुरा छीनकर जिन्न की छाती पर पैर रखकर उसको ललकारा'' आज तुझे जिन्न योनि से मुक्त करूंगा'' पाखंडियों ने उनके पैरों में गिरकर उनसे माफी मांगी। उसके उपरांत वह पूरा इलाका जिन्न(भूत-प्रेत) से मुक्त हो गया। हनुमान चालीसा में जगत प्रसिद्ध श्लोक''भूत पिशाच निकट नहीं आवे महावीर जब नाम सुनावै।'' आदि गुरू हनुमान जी ने अपने बालमुकुंद रूप में भी कल्कि समाज के आदि मंत्र ''हक अनीह'' का जाप करते हुए इस मर्यादा का निर्वाह किया।

<u>जब बालमुकुंद जी ने लार्ड मैटकॉफ की बग्गी पलटकर मरघट वाला मंदिर टूटने से बचाया</u>

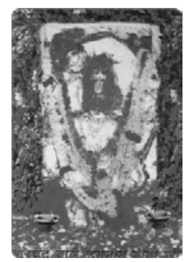

हनुमान मंदिर

बच्चों/साथियों, बेला रोड जिसके एक ओर श्री हनुमान जी का मंदिर जो मरघट वाले हनुमान मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है, कभी श्री यमुना जी उससे सटकर बहती थी। यह मंदिर मरघट के मध्य में हुआ करता था। धीरे -धीरे यमुना जी कुछ खिसकने लगी और ब्रिटिश सरकार ने भी ताजे वाला और वजीर पुर का बाँध बनाकर श्री यमुना जी को खिसकाया

त्रिपोलिया पुल

(प्रमाण स्वरूप में लालकिला जो इसी सीध में है, त्रिपोलिया के तीन दरवाज़े और राजघाट प्रसिद्ध है ही। वे यमुना जी के तत्कालीन प्रवाह के अब भी साक्षी है। इन पर बना हुआ पुल तो अपनी कथा कह ही रहा है) अस्तु ब्रिटिश सरकार ने पंजाब जाने वाली सड़क बनाने का कार्य आरंभ किया। बीच में श्री हनुमान जी का मरघट वाला मंदिर आड़े आता देखकर इसे हटाने की योजना बनाई गई।

चारों ओर खुदाई होने लगी। योजना बनी कि किसी समय रात-बिरात को हनुमान जी का विग्रह उखाड़ दिया जाएगा। श्री बालमुकुंद जी (गुरू जी) नित्य यमुना स्नान करने जाते थे। कुछ भक्तों ने उनसे इस समस्या का बखान किया। वे स्नान करके उधर की ओर चल दिए। देखा कि प्रधान इंजीनियर दो घोड़े वाली बग्घी में बैठकर निर्माण कार्य का निरीरक्षण करने जा रहा है।

श्री गुरू जी ने दौड़कर पीछे का पहिया पकड़ लिया। दौड़ते हुए घोड़े पैर उठाए रह गए। सईस ने हंटर पर हंटर फटकारे घोड़े पूरी शक्ति लगा रहे थे किंतु

बालमुकुंद जी ने मरघट वाला मंदिर टूटने से बचाया

बग्घी ऐसे जाम हो गई मानो स्वयं धरती माता उस बग्घी को पकड़ कर थामकर बैठ गई हो। सईस ने उतर कर देखा कि श्री गुरू जी पहिया थामे खड़े हैं। आश्चर्य से उसकी आँखें फैली की फैली रह गई। प्रधान इंजीनियर ने बग्घी से उतरकर, अपना टोप उतारकर श्री गुरू जी को प्रणाम किया। अपने सईस के माध्श्म से पूछवाया कि वो क्या चाहते हैं? गाड़ी का पहिया पकड़कर, उसे रूकवाने के पीछे उनकी क्या भावना है? श्री गुरू जी ने उत्तर दिया , ''तू मेरा मंदिर हटाना चाहता है, मैं उसे हटने नहीं दूंगा। यदि तूने हठ ठान रखी है तो इसकरा परिणाम अच्छा नहीं होगा, तू पछताएगा।''

प्रधान इंजीनियर आश्वासन सूचक हाथ हिलाते हुए,पहिया छोड़ने की प्रार्थना करते हुए बग्घी में जा बैठा। बग्घी अपने मार्ग पर चल पड़ी।

सड़क निर्माण के काम में लगे हुए मजदूरों ने यह दृश्य देखकर काम करने से इंकार कर दिया। पूरे घटनाक्रम से अवगत होते ही ईसाई समाज अपने धर्म का उपहास और हिंदू धर्म का स मान ध्यान में रखकर भड़क उठा। उनके समूह के समूह एकत्रित हो-होकर लाट साहब मैटकॉफ के पास प्रतिनिधी मंडल के रूप में जा जाकर मंदिर को नष्ट करने की ज़ोरदार मांग करने लगे।

लाट साहब मैटकॉफ द्वारा मजदूरों की पलटन लेकर मरघट वाले मंदिर को तोड़ने आना

अंत में इस कार्य को तुरंत निबटाने के लिए लाट साहब मैटकॉफ अपनी बग्घी में अपनी मेमसाहब को साथ लेकर मंदिर की ओर मूँह किए चल पड़े। अभी वह मंदिर के पास पहुँचे भी नहीं थे कि बग्घी ऐसे उलट गई मानों
किसी बच्चे ने खिलौने को औंधा कर दिया हो।

साहब मेमसाहब धरती पर आ गिरे। चोट तो विशेष नहीं आई किंतु किरकिरी बहुत जोरदार हुई। किसी प्रकार मजदूरों ने बग्घी को सीधा किया। लाट साहब सिर नीचा किए लौट गए साथ ही गदाधारी ब्राह्मण के रूप में प्रगटे श्री हनुमान जी के प्रताप को मान गए॥

उसका प्रभव यह हुआ की श्री रामलीला की सवारी उनके नेतृत्व-संचालन या प्रबंध में जामा मस्जिद के नीचे से विधिवत बाजे-गाजे के साथ निकलने

लगी। इतना ही नहीं लॉटसाहब स्वयं मस्जिद के पास खड़े होकर जनता को प्रेरणा देते थे कि जोर से बोलो'' सियावर रामचंद्र की जय''

दिल्ली कश्मीरी गेट स्थित मेटकॉफ हाउस

मुसलमानों की भारी शिकायतों के कारण उनका तबादला कहीं ओर कर दिया गया। इस पर उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

ये लॉटसाहब मैटकॉफ थे इन्हीं का मैटकॉफ हाऊस जी.पी.ओ से आगे कशमीरी गेट पर श्री हनुमान जी के मंदिर के समीप ही है।

लाट साहब मैटकॉफ स्नान करने के बाद हनुमान मंदिर की ध्वजा का दर्शन करने के पश्चात ही कुछ ग्रहण करते थे। इस व्रत का निर्वाह उन्होंने जीवन पर्यन्त किया।

<u>हम कल्कि भक्त आदि-मंत्र हक अनीह को मानते तो हैं लेकिन ठीक तरह जानते नहीं</u>

इस लेख का एकमात्र उद्देश्य है''हक अनीह निष्कलंक गौरंडा: (गौरंडाह्) दुष्टा: नाशनम् पापहा'' मंत्र की चमत्कारी शक्तियों से कल्कि भक्तों को अवगत कराना। हम कल्कि भक्त अभी तक हक अनीह मंत्र का जाप व हवन धन्वन्तरी जी की कृपा प्राप्त करने के उद्देश्य से ही करते आए हैं। कई पुराने कल्कि भक्तों से यह अवश्य सुना था कि यह हनुमान जी का मंत्र है। कीर्तन हवन में आरती करने के पश्चात् ताली बजाकर इस मंत्र का 5 बार जाप किया जाता है। विशेष संकट की परिस्थियों में रास्ता पाने के लिए में कल्कि भक्त शनिवार के दिन हनुमान जी की 11 दीपक की पूजा करते समय ''हक अनीह'' मंत्र की एक माला का जाप करते हैं।

<u>यह मंत्र वास्तव में कल्कि भक्तों में अपार शक्तियों को प्रवाहित करने वाले ट्रांसफार्मर की तरह है</u>

जब गुरू बालमुकुंद जी में बजरंगबली की पूर्ण शक्ति का आवेश जागृत हुआ उसके बाद ही यह मंत्र उनके मुख से प्रगट हुआ, मानो ब्रह्मांड में उत्पन्न हुआ। अत: यह मंत्र कल्कि भक्तों में अपार शक्तियों को प्रवाहित करने वाले ट्रांसफार्मर की तरह है। यह मंत्र कल्कि भक्तों को कलियुग से निरंतर लड़ने और श्री कल्कि के प्रचार कार्यों को सफलता पूर्वक पूर्ण करने के लिए अपार शक्ति प्रदान करता है। कलियुग की भ्रामक शक्तियों के प्रभाव से हम पथ भ्रष्ट न हों किसी भी प्रकार के अनिष्ट से और रोगों से सुरक्षित रहें । यह मंत्र हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। सच्ची गुरू कृपा जो हमें भगवान श्री कल्कि के मनोकूल कार्य करने का दृढ़ संकल्प दें और सच्चा कल्याण कारी मार्ग दर्शन जो हमें निरंतर प्रभु के निकट ले जाए(हमारे पुण्यों का क्षय न हो)वह इस मंत्र के जप एवं हवन से प्राप्त होती है।

सोई हुई आत्मा को जगाकर तेजोमयी बनाने वाला कभी न थकने वाला सिद्ध मंत्रों का यंत्र

T.V. न्यूज चैनल 'आज तक' ने दिखाया कि आज से 220 वर्ष पूर्व जयपुर के संस्थापक सवाई राजा जयसिंह भगवान श्री कल्कि के महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमापते का सिद्ध मंत्र जपते थे वही अनुभवगम्य मंत्र इस चमत्कारी Box में है जिसे 45 वर्षों से कल्कि भक्त जप रहे हैं।

कहना, सुनना आसान है कि सदा भगवान का ध्यान करें और गुणगान करें लेकिन कलियुगी आसुरी शक्तियों ने आज की भागदौड़ व आपाधापी भरे जीवन में चौतरफा से ऐसे घेर रखा है कि मन को भगवान का नहीं क्रोध और अहंकार का मन्दिर बना दिया है। सुधारों (Developments) के नाम पर बढ़ रही महंगाई के चलते धार्मिक आयोजन व मन्दिर निर्माण 'संभव नहीं'। इस चमत्कारी Box के साथ अपने घर, दुकान, मन और आत्मा में से बुरी शक्तियों एवं विकारों को निकालकर भगवान का मन्दिर बना सकते हैं।

मंत्र बाक्स
₹250

यंत्र को चलाने की विधि—

प्रात: एक बार इस रटने वाले यंत्र को चालू करके सारी ध्वनि सुन लेवें। आपका दिमाग, शरीर, मन व आत्मा जिस ध्वनि को पसन्द करे आज उसी ध्वनि का स्विच दबा दें (जैसें मन भूख न होते हुए भी मनचाहे स्वादिष्ट भोजन ले लेता है)। तो वह यंत्र वही ध्वनि रटता रहेगा। जब मन चाहें दूसरी बदल लें।

शुरू करने के उपरान्त भगवान श्री कल्कि का ध्यान करके प्रार्थना करें कि हे कल्कि भगवान सुबह से रात तक जो यह ध्वनि चलेगी, मैं व मेरा परिवार सुनेगा, उसका सारा फल आपके श्रीचरणों में सादर समर्पित है, इसे स्वीकार करें, गऊ ब्राह्मणों व धर्म की रक्षा कीजिए, शीघ्र प्रकट होईए। मेरे घर व व्यापार से दुराचारी, कलियुगी, आसुरी, तांत्रिक शक्तियों को निकालिए, दैवी शक्तियों को लाईए, फिर अपनी परेशानियां बोलिए··· हमें रास्ता दीजिए, हमें आपका

काम करना है…

यंत्र की आवाज (Volume) दिमाग और शरीर को सुहाने के हिसाब से रखें (Adjust)।

अब आप घर व व्यापार के प्रतिदिन की तरह कार्य शुरू कर लेवें। आप पायेंगे कि आपके सारे कार्य सरलतापूर्वक (Smooth) चल रहे हैं। आपके मुँह से नहीं बल्कि आपकी आत्मा में से चल रहे मंत्र की गुनगुनाहट निकलेगी इसीलिए इसे कहा गया है सुप्तात्मा (सोई हुई आत्मा) को जगाने वाला यंत्र।

समृद्धि (Prosperity) के लिए बन पड़े तो इस यंत्र को **उत्तर पश्चिम कोने में रखकर चलाएं।**

कब कौन सा सिद्ध मन्त्र चलाए

1. ''**जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते।**'' महामंत्र भगवान श्री कल्कि से सम्बन्ध उजालने वाला। धन वैभव बढ़ाने वाला।
2. ''**जय श्री कल्कि जय माता दी**'' माँ वैष्णवी भगवती दुर्गा व कल्कि जी की शक्तियों द्वारा बिगड़े हुए कामों को बनाने वाला मंत्र।
3. ''**गुरूजी करेंगे कल्कि जी करेंगे, गुरूजी ने किया है कल्कि जी ने किया है।**'' हौसला गिर रहा हो—बेचैन-परेशान हो तो क्या कैसे करूं तो (हनुमान जी/लक्ष्मी नारायण जी/आपके अपने गुरू हैं) उन पर एवं कल्कि जी पर (राजा-साधु वाली कथा के अनुसार) भला बुरा छोड़कर काम करते चले जाओ। हिम्मत मिलेगी, सफल होंगे।
4. ''**ॐ नमः कल्कि फट् स्वाहा**'' एक बार इस मन्त्र के उच्चारण से 37,500 राक्षस शक्तियों पर मार पड़ती है। घर-व्यापार व अन्य स्थानों से बुरी शक्तियों को निकालने व दैवी शक्तियों को सक्रिय करने में यह मन्त्र अत्यन्त लाभकारी है। खाली कमरे में भी इस मन्त्र के चलने से आसुरी शक्ति हटेंगी, देवी शक्तियां आयेगी, आपको स्वयं फर्क नजर आवेगा।
5. ''**सब दुःखो की एक दवाई, हँसना सीखों प्यारे भाई, कल्कि-कल्कि कहना सदा हँसते रहना**'' मन का बैठना (Sinking), तनाव (Depression) आदि के लिये यह मन्त्र विशेष फलदायी है।
6. **राम कहो कृष्ण कहो और कहो कल्कि।**
   कल्कि जी का नाम है धार गंगाजल की॥
   भगवान के संकीर्तन से गंगा महारानी तो प्रगट होती ही है वातावरण को भी अपने जैसा अमृत के समान बना देती है। अच्छा खाते-पीते भी जब सब

कुछ होते हुए भी मन में उच्चाहट होने पर विशेष फलदायी।

7. ''**करत-करत तव् चरण वन्दना बिगड़ी बनत गई—कल्कि जी मैंने तुम्हारी शरण लई**'' अकाल मृत्यु, असाध्य रोगों को काटने वाली इस मन्त्र की माला/हवन नियम से करने से रास्ता मिलता है, कष्ट दूर होते हैं।

कल्कि भगवान कौन हैं? कलियुग में भगवान विष्णु ने कल्कि रूप में अवतार लिया है, जिनके लिए माँ वैष्णो तप कर रही है, हनुमान जी को गुरू मानकर कल्कि जी की अराधना से स्वप्न, जागृत व वाणी अनुभवों द्वारा रास्ता मिलता है।

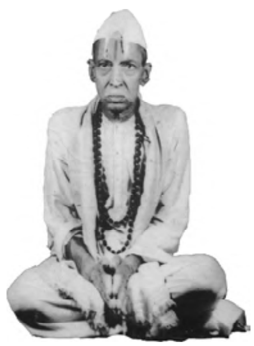

रामकृष्ण परमहंस के अवतार गुरूवर लक्ष्मीनारायण

सवा लाख महामन्त्र के जाप का संकल्प—महज 108 माला के मनको की तरह 4 घंटे प्रतिदिन ''जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते'' 108 दिन चलाने से सवा लाख मन्त्रों का जाप हो जाता है।

प्रसंग—**मेरे नानाजी कोमा में पड़े हुए थे। श्री गुरूजी रामे बाबू के साथ उन्हें देखने आये थे, इस अवसर पर बोले गए शब्द—दिसम्बर, 1963,**

''रामे तुम जो टेपरिकॉर्डर लाए हो उसमें से कल्कि जी के भजनों के जो शब्द निकलते हैं उससे न सिर्फ मन बल्कि आत्मा को भी बल मिलता है। उससे कलियुग की शक्तियां कटती हैं और दैवी शक्तियों को बल मिलता है।

यहां तक कि वह शब्द ब्रह्माण्ड में जाकर अमर हो जाते हैं।''

फायदे—जिस प्रकार कमरे में अगरबत्ती के जलने से खुशबू फैल जाती है उसी प्रकार यह रटने वाला यंत्र बुरी शक्तियों को घर व व्यापार से हटाने वाला, तनाव, चिंता, घबराहट, डर, भय, हृदय में हौल (Sinking) को दूर करने वाला, पितृों को शक्ति व संतुष्टि देने वाला, समृद्धि प्रदान करने वाला है।

प्रस्तावना

प्रिय बच्चों / साथियों

पंडित मनोकांत तिवारी जी द्वारा रचित भजनों का अनूठा संग्रह पुनः आपके हाथ में है।

प्रस्तुत भजनों में कहीं प्रभु श्री कल्कि के आने की आर्त पुकार है तो कहीं उनके प्राकट्य से दुष्टों का सर्वनाश कर उनके राजसिंहासन पर विराजने का चित्रण है। संक्षेप में गौ, विप्र, पृथ्वी और सज्जन लोगों की पुकार को बड़े ही मार्मिक ढंग से सरस्वती महारानी ने पिरवाया है। एक एक शब्द वेदना के अथाह सागर में से निकली करूण पुकार है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि प्रभु श्री कल्कि के भजनों में भक्त / कवि की करूण पुकार ही उनके प्राक्ट्य का निमित्त बनेगी।

फ्री की सलाह से बचें:-

प्यारे बच्चों हमारे भारतवर्ष में सलाह फ्री की मिलती है। 2 इन 1 पद संग्रह पुस्तिका का एक संस्करण 2016 में छप गया और दूसरा सिर्फ फालतू के सलाहगीरों के कारण पैनल तो फंसा, आप भविष्य में बचें।

श्री कल्कि पैनल

आमुख लेखक- आचार्य प्रभाकर मिश्र एम.ए. साहित्याचार्य
(कार्यालय मंत्री:श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब)

दिनांक-12-8-65
रक्षाबंधन श्रावणी पौर्णमाशी
आचार्य प्रभाकर मिश्र

श्री मनोकांत तिवारी द्वारा लिखित श्री कल्कि पद संग्रह नामक पुस्तिका देखी, लेखक ने इन पदों में भक्ति भावना,पद लालित्य और ओज सभी बातें एकसाथ भरकर गायकों और पाठकों के लिए सुंदर कार्य किया है। इस कलिकाल में श्री कल्कि पद संग्रह के गीत और भजन कल्कि भगवान की कृपा प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होंगे। मैंने देखा ही नहीं बल्कि लेखक के मुख से स्वयं यह गीत सुने हैं। भाषा, भाव शैली,सरसता, सभी से ओत-प्रोत गीत हैं। मैं तो इन गीतों के एक एक शब्द में कलिपावन श्री कल्कि भगवान की प्रतिबिंब बन कृपा दृष्टि अनुभव करता हूँ। मुझे आशा है कि इन गीतों के सर्वत्र गायन,मनन निधिध्यासन से प्रभु का साक्षात्कार भी होगा।

अनुक्रमणिका

1. यदि ये पाँच न होते तो हिंदू फोटो में रह जाता..2
2. जागो हिंदू जागो...3
3. अखंड भारत 4
4. शक्तिपीठ 51 नहीं 62 हैं...5
5. कुंए भी खाली हो जाते हैं..6
6. महीने में 26 दिन ऑनलाइन वर्चुअल गुरुकुल 7
7. जगद्गुरु का आवाहन...8
8. गूगल के नक्शे पर कल्कि जी के मंदिर...9
9. महाविष्णु के 24 अवतार..10
10. होंगे नव निर्माण खूब सजेंगे..11
11. कल्कि वालों के गुरू हनुमान जी...12-18
12. कल्कि जी के मंत्रों का यंत्र...19-21
13. प्रस्तावना..22
14. धनवान बने रहने की कल्कि जी की सरल नियमावली.....................116
15. योगी योगनियों ने इसे भी ठगा...114
16. प्रभाकर मिश्र द्वारा प्रशस्ति पत्र..23
17. अनुभव उपचार केंद्र...34-39

भजनावली

1. न ठकुराओ शरण में भी हमें हे नाथ...28
2. वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे...28
3. आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि...29
4. श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ...30
5. कल्कि प्रिय पद्मा रमा...30
6. खूब सजेगा कल्कि जी तेरा मंदिर...31
7.श्री कल्कि को खुश करना आसान होता है..32
8. हमें दर्शन दिखा देना...33
9. मेरी विपदा में बन जाओ प्रभु..40
10.भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार..40

11. अब तुम से लगी है आस.....41
12. था अजामिल एक पापी.....42
13. राह काँटों से भरी.....42
14. बे सहारों के सहारे हो कहाँ.....43
15. पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ.....44
16. दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों.....45
17. प्रभुजी प्रभुजी तुम सुन लो टेर हमारी.....45
18. ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया.....46
19. लोग कहते हैं कि मुद्दत से ये कल्कि वाले.....46
20. मुरली भी सुनेंगे देखेंगे.....47
21. दिन है दो चार भजन के.....48
22. जहाँ जहाँ गंगा बहती है.....48
23. प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा.....49
24. आओ कल्कि तलवार ताने.....50
25. स्वासों के संग में उठती उमंग में.....50
26. बिगड़े हुए जिसके हों दोनों जहाँ.....51
27. हे काल रूप कल्कि प्यारे.....52
28. क्या दीन दुखी भक्तों को.....52
29. हे कल्कि भगवान तुम्हें अब.....53
30. हमें अब दुख से उबारो हरि.....55
31. आये नहीं अब तक हुए वायदे सभी.....55
32. कल्कि स्वामी आओ.....56
33. कल्कि जी करो हमारा ख्याल.....57
34. भूमि का उतारो भार 57
35. असहाय हैं क्यों आज.....59
36. भगवान तुम्हारी दुनिया में.....60
37. कौन कहता है घड़ा पाप का.....60
38. जब दुनिया पाप कर पृथ्वी.....61

39. उठो भारत जगाया जा रहा है..62
40. श्री कल्कि भगवान का दुधारा देखो...63
41. डोल उठी पापों से धरती...63
42. कल्कि जी जब कि घोड़े पर चढ़ के..64
43. जब स्वर्ग से प्राणी पतित हुए 64
44. लीला अवतार की निराली होगी 67
45. नक्शा बदल देने को जमीं आसमान का..67
46. खड्ग मुरली बनी श्री कल्कि बने..68
47.पाप के ताप से पीड़ित पृथ्वी 69
48.अपने भक्तों से हरि आज मिले...70
49. कलियुग में जबकि कल्कि बने..71
50. आओ भक्तों महिमागायें...73
51. श्री कल्कि नाम मन भाया है...74
52. जो सुमरनी संभाल करबैठे...75
53.श्री कल्कि पद्मा नाथ जब सिंहासन...76
54. न सत्संग को छोड़ो न सुमरन को छोड़ो...77
55. गाये जा निश दिन गुन गिरधर के...77
56. जैसी करनी वैसी भरनी...78
57. श्वांस में सुमरन समा गया..79
58. भक्ति की ज्योति जगा हरि गुन गा..79
59. कल्कि कल्कि कहते जाना..80
60. सुप्तात्मा जगाकर परमात्मा को पाले..80
61. फिर फिर आये जनम नित पाये..81
62. श्री कल्कि जपो रे मन भजो रे मन..81
63.मन भजन में रहो घर या वन में रहो..82
64. तेरा जीवन बिरथा बीत गया...82
65. भज मन श्री कल्कि नारायण...83
66. मतवाले हरि गुन गा ले...84
67. मन कल्कि कल्कि गाया कर..84

68. तुम कल्कि कल्कि बोलो रे...85
69. अरे ओ मूढ़ बन्दे देख...85
70. मस्त होकर जिन्दगी भर..86
71. बढ़ता चल जीवन में प्रति पल..87
72. गोकुल की गलियों में ढूंढे...87
73. खिला फूल उपवन में टूटा..88
74. राम है अपना सुंदर श्याम..89
75. गाए जा गाए जा कल्कि नाम प्यारा...90
76. कल्कि नाम के हीरे मोती..90
77. जो हरि सुमिरन करता है...91
78. सिर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए...92
79. हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा 93
80. पुकारे नहीं सुन रहे गाय की, तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया........94
81. तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया...97
82. देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए 97
83. लगे रहो कल्कि के प्यारों 98
84. देखे कब होता है पूरा वादा मुरली वाले का...................................100
85. सागर में नैया डग-मग डोले...101
86. मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए..102
87. श्री दुर्गा स्तुतिः...103
88. त्रैकालिक प्रार्थना..106
89. मुक्तिदायिनी आरती...109
90. फल समर्पण...110
91. भगवान श्री कल्कि का भोग...111

बहुरंगे पृष्ठ (चित्र)

1. भगवान श्री कल्कि ....मुख्य पृष्ठ 1
2. मत कर अभिमान रे हिंदू...मुख्य पृष्ठ 2
3. ऐसे योगी-योगिनियां ठगकर ले जाती हैं..मुख्य पृष्ठ 3
4.भजन गाने या सुनने से सोये दिमाग से डर घबराहट दूर होना शुरू........मु.पृ. 4

1. न ठुकराओ शरण में ही

न ठुकराओ शरण में ही
हमें हे नाथ रहने दो
हमारे शीश पर अपनी
कृपा का हाथ रहने दो
भजन का तार ना टूटे
तुम्हारा द्वार ना छूटे
सदा सम्बन्ध नयनों का
छवि के साथ रहने दो ॥ 1 ॥
सुबह या शाम दुख सुख में
तुम्हारा नाम हो मुख में
निरन्तर नित्य चरनों में
झुका यह माथ रहने दो ॥ 2 ॥
रहे मन में सदा बांकी
तुम्हारे रूप की झांकी
जुड़ी दिन रैन कानों से
गुणों की गाथ रहने दो ॥ 3 ॥

2. वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे

वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे
है कौन जो कि तुम बिन इस भार को उतारे
तुम चर-अचर जगत के करतार हो कहाते
जब-जब अधर्म बढ़ता अवतार लेके आते

इस बार कल्कि बन के क्यूँ ना असुर हारे
वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे ॥ 1 ॥

है पाप छल कपट का छाया यहाँ अन्धेरा
भगवान कब करोगे तुम सत्य का सवेरा
हम आस ले के आये दरबार में तम्हारे
वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे ॥ 2 ॥

3. आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि

आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि
अश्व चढ़े खड्ग ले विशाल कल्कि महाकाल कल्कि
धर्म को विश्व ठुकरा रहा है
पाप बढ़ता चला जा रहा है
तुम होकर समर्थ, देखते हो अनर्थ
कहो बनते नहीं क्यूं कराल कल्कि
आओ गौ विप्र प्रतिपाल कल्कि ॥ 1 ॥

शस्त्रों में समाओ समय के
बरसो मेघ बनके प्रलय के
करो रण में प्रवेश, धरो वर वीर वेष
क्रोध कंपित अधर नयन ज्वाल कल्कि
आओ गौ विप्र प्रतिपाल कल्कि ॥ 2 ॥

रक्त से जब धरा लिप्त होगी
महा काली तभी तृप्त होगी
भार होगा न शेष, मोद भर के महेश

पुनः पहनेंगे नर मुण्ड माल कल्कि
आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि ॥ 3 ॥

4. श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ

भावार्थः प्रस्तुत भजन में लेखक श्री कृष्ण के दिव्य क्रीट कुंडल एवं केयूर बाजूबंद और कौस्तुभ मणि (दोनों समुद्र मंथन से प्राप्त) की जगमग से सुशोभित दिव्य रूप को अब श्री कल्कि रूप में देखने की इच्छा प्रगट कर रहे हैं कि हे प्रभु श्री कल्कि अब देर न करो अश्व पर सवार होकर गुरू बाल मुकुंद जी के संग हमें दर्शन देने आ जाओ।

श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ कल्कि रूप में
बल दाऊ जी के भैया आ जाओ कल्कि रूप में
नैन बड़े बेचैन रहें दिन रैन दरश के प्यासे
नीरस जीवन तुम बिन भगवान ऊबा मन दुनिया से

दुख हर लो और सुख बरसाओ कल्कि रूप में ॥ 1 ॥
अश्व सवारी खड्ग हाथ गुरु बालमुकुन्द जी संग में
कुंडल क्रीट दमकते जग मग, आभूषण अंग-अंग में
सज के संत सुजन मन हर्षाओ कल्कि रूप में ॥ 2 ॥

5. कल्कि प्रिय पद्मा रमा

भावार्थः प्रस्तुत भजन में पंडित मनोकांत तिवारी अंर्तयामी प्रभु श्री कल्कि जी की शक्ति पद्मा, रमा जी से प्रभु की भक्ति का निर्मल भक्ति का वरदान मांग रहे है कि मैं सांसारिक कर्तव्यों जैसे विप्र पूजा एवं सत्कर्मों को करते हुए कल्कि जी के ध्यान में ही दिन रात मगन रहूँ।

कल्कि प्रिय पद्मा रमा दो मुझे वरदान माँ
जागते सोते कहूँ कल्कि भगवते नमः

तुम त्रिदेवो के स्वामी अन्तर्यामी की हो शक्ति,

कामना है यह मेरी तुम से पाऊँ निर्मल भक्ति,
भाव मय होके कहूँ कल्कि भगवते नमः
कल्कि प्रिय पद्मा रमा ॥ 1 ॥

विप्र पद पूजा सेवा सत्कर्मो से मुख ना मोड़ूं
कभी कर्त्तव्य विमुख होके अपना धर्म ना छोड़ूं
ध्यान मय होके कहूं कल्कि भगवते नमः
कल्कि प्रिय पद्मा रमा ॥ 2 ॥

6. खूब सजेगा कल्कि जी तेरा मंदिर

खूब सजेगा कल्कि जी तेरा मंदिर
होगा नव निर्माण होंगे सपने साकार
मेरे कल्कि जी, कल्कि जी

भवन बनेगा बड़ा प्यारा बड़ा सुंदर
होगा नव निर्माण होंगे सपने साकार
मेरे कल्कि जी, कल्कि जी
खूब सजेगा कल्कि जी तेरा मंदिर....

लाखों सेवक रोज नियम से आते हैं तेरे द्वार हो
छोटा पड़ता मंदिर तेरा लगती भीड़ अपार हो
सावन में तेरी एक झलक को
तरसे हैं नर-नार हो,बड़ा ही सुलम होगा तेरा दर्शन

होगा नव निर्माण होंगे सपने साकार
मेरे कल्कि जी, कल्कि जी

खूब सजेगा कल्कि जी तेरा मंदिर....

गुरू बालमुकुंद जी ने देखा, होगा सपना साकार हो
गुरू लक्ष्मी नारायण जी को इस घड़ी का था इंतजार हो
कल्कि प्रभु का भवन निराला होगा हर मोड़ हो
भगत करेंगे सारे मिलकर वंदन

होगा नव निर्माण होंगे सपने साकार
मेरे कल्कि जी, कल्कि जी
खूब सजेगा कल्कि जी तेरा मंदिर....

पहल करी भक्तों ने पीछे मान गया संसार हो
तेरी मेहर होई तो हो गया अब भवन तैयार हो
हम सब मिलकर सब बोले कल्कि की जयकार हो
तन मन धन करो श्रद्धा से अपर्ण

होगा नव निर्माण होंगे सपने साकार
मेरे कल्कि जी, कल्कि जी
खूब सजेगा कल्कि जी तेरा मंदिर....

7.श्री कल्कि को खुश करना आसान होता है

श्री कल्कि को खुश करना आसान होता है,
संकल्प निकालने से हर काम होता है।
करामात है इनकी, अनुभव की लीलाएँ
राह की हटा देते, भुगतान से शिलाएँ

हाइट आफॅ ग्लोरी अपने, हर भक्त को दिलाएँ
संकल्प निकालने से हर काम होता है...........

माँ लक्ष्मी के आगे, पूरा जोर है इनका
कहे भक्त कलियुग में, पूरा शोर है इनका
जो माने इनको वह घर, धनवान होता है
श्री कल्कि को खुश करना आसान होता है
संकल्प निकालने से हर काम होता है...........

कलियुग के नारायण, चौंसठ कलाधारी
सदा मौज में रहते, जो इनके प्रचारी
अपने प्रचारक से ये, बड़ा प्यार करते है
संकल्प निकालने से हर काम होता है............

8. हमें दर्शन दिखा देना

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक अपने देश की चिंता से त्रस्त इसकी सुरक्षा की कामना कर रहे हैं। है। वह प्रभु को उनके वचनों की याद दिला रहे हैं कि आपने ही कहा था कि जब भी कोई विपदा आ पड़े तो मुझे बुला लेना। प्रभु आज हमारा देश बहुत ही संकट में है । हमारी आँसुओं से भरी हुई आँखे आपकी ओर ही निहार रही है। हमें सीने से लगा लेना संकट की घड़ी में हमारी ओर से मुँह मत फेर लेना।

हमें दर्शन दिखा देना हमें अपना बना लेना
हमारे देश को भगवन तबाही से बचा लेना
कहा था आपने गर जो पड़े दुख तो बुला लेना
चले आओ दुखी दिल चाहते हैं आसरा लेना
हमें दर्शन दिखा देना··· ॥ 1 ॥
तुम्हारी ओर आँखें हैं न हम से मुँह छिपा लेना
हमें अपना समझ कर नाथ सीने से लगा लेना
हमें दर्शन दिखा देना हमें··· ॥ 2 ॥

अनुभव-उपचार केंद्र

श्री कल्कि को खुश करना आसान होता है, संकल्प निकालने से सब काम होता है

स्वंय को अनुभव आने पर अब इससे उपचार खोज भी सकते हैं
जहाँ भी हो जैसे भी हो खुद भी कर सकते हैं
पेटीएम से पैसा भेज कर भी करवा सकते हैं

कल्कि विष्णु मंदिर (श्रीगुरू जी की तपोस्थली के सामने) चौक श्री कल्कि मंदिर कूंडे वालान अजमेरी गेट दिल्ली_-6 में भगवान श्री कल्कि सहित अन्य *शक्तियों* के 100 जन की भोग भंडारें की प्रतिदिन की 27 मार्च 2020 क्रोरोना काल से चली आ रही व्यवस्था

कल्कि विष्णु मंदिर में यह सब क्यों किया जा रहा है ?

बच्चें/साथियों हमारे सनातन धर्म में एवं *प्रतिष्ठित* महिमा मंडित हिन्दू मंदिरों में भगवान को भोग लगा कर भंडारा बांटने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। यह प्रमाणिक तथ्य है कि जिन मंदिरों में इस प्रथा का पालन किया जाता है। उन मंदिरों का तेज एवं महिमा दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ती ही जाती है।

श्री कल्कि विष्णु मंदिर का महात्तम

1) इस मंदिर में स्थापित श्री कल्कि का श्री विग्रह ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के अवतार हमारे गुरू महर्षि लक्ष्मी नारायण जी की देखरेख में निर्माण हुआ था।

2) इस मंदिर के लिए कल्कि भक्तों को विशेष अनुभव आए हैं कि यह मंदिर सतयुग तक बना रहेगा।

3) दिल्ली में यह भगवान श्री कल्कि का सर्वप्रथम स्थापित मंदिर है।

4) मनुष्य के पापों का भुगतान वसूलने के लिए ब्रह्माण्ड की शक्तियों के द्वारा भेजे गए योगी-योगिनियाँ पृथ्वी पर आते हैं। वे मनुष्य के जीवन में रोग शोक दरिद्रता क्लेश इत्यादि विभिन्न दुखों के कारण उन्पन्न करते हैं। इन कारणों को दूर करने के लिए भगवान श्री कल्कि ने स्वप्नानुभव लीला के माध्यम से इन योगी-योगिनियों को संतुष्ट करके उनके लोकों में वापिस भेजने का सरल रास्ता बताया है।वो है कचौड़ी-आलू की सब्जी, हलवा, इमरती, लड्डू आदि ।अगर हम कचौड़ी, आलू की सब्जी के साथ हलवा व लड्डू का भोग लगाँए तो हनुमान जी व दुर्गा जी की योगी-योगिनियाँ संतुष्ट होकर अपने अपने लोकों में वापिस चली जाती हैं।

इसी प्रकार उड़द की दाल की इमरती से दुर्गा जी की 64 योगनियां, योगमाया जी की 15 योगनियां, वासुकी जी की पांच सर्प *शक्तियाँ*, बीमारी ना पता चलने पर दुर्गा जी का 20 रू के संकल्प के साथ 14 पराठें, भैरों बाबा के बुधवार को 20 रू के संकल्प के साथ चार रोट आदि दिए जाते हैं।

इन सब के साथ श्री कल्कि विष्णु मंदिर में अन्य उपचार सामग्री भी *उपलब्ध* हैं जो इस प्रकार हैं-

हलवे का सवाया:- इसमें कल्कि भगवान एवं अन्य सभी दैविय शक्तियों की विशेष कृपा पाने तथा अपनी मनोकामना पूर्ति के लिये बोल कबोल का प्रसाद लगाया जाता है। इसमें सवा किलो/सवा पाँच किलो/सवा ग्यारह किलो/सवा पचास किलो (सवामनी) हलवा व लड्डू जो भी आपको बाँटने हों उसका प्रसाद लगाया जाता है।

नोट:-सवा किलो हलवा (देसी घी) का सिर्फ 150 रू का है।

हनुमान जी की योग योगिनियाँ- जब हमारे घर व जीवन में बेकार के झगड़े हो रहे हों,

- काम बनते बनते रूक रहे हों
- बीमारी के चंगुल में फंस गए हों
- धन का तेजी से नुकसान हो रहा हो
- अनुभव में अपने आप को मैले कुचैले, दरिद्र लोग के चंगुल में फंसा देख रहे हों

दुर्गा जी की योग-योगिनियाँ- जब टैक्स डिर्पाटमेंट की कोई परेशानी हो

- घर में क्लेश हो रहे हों - पति पत्नी में झगड़े हो रहे हों - अनुभव में दूसरी शादी होते हुए दिखे
- लड़का व लड़की किसी दूसरे से प्यार करने लगें

इन सभी परिस्थितियों में आपके नाम से कल्कि विष्णु मंदिर में दुर्गा जी एवं कल्कि जी के आगे संकल्प करके प्रसाद जरूरत मंदों (योगी-योगिनियों)में बांटने की प्रतिदिन व्यवस्था है। इससे कल्कि भक्तों की परेशानी तुरंत दूर होना शुरू हो जाती है विस्तार से पढ़े ग्रंथ स्वप्न अनुभव संपदा, 101 आपबीतियां आदि।

नोट:-एक प्लेट की कीमत 35 रू है।

डिटेल :- कितनी कचौरी हलवा आदि लिखें आप अपनी परेशानी के हिसाब से एक / दो / अथवा पांच प्लेटों का संकल्प कर सकते हैं।

दुर्गा जी की 10-10-6 हलवा पूरी- जब आप भारत सरकार की दण्डनीय शक्तियों के चंगुल में फंस गए हो जैसे पुलिस, कोर्ट, कचहरी, इनकम टैक्स, वैल्थ टैक्स, कस्टम, सेल्स टैक्स, एक्साइज, कुर्कि, दुकान या प्रापर्टी की सीलिंग या आपके खिलाफ कोई बड़ी सरकारी एंक्वायरी बैठ गई हो।

समृद्धि- अमावस्या के दिन पितरों का तर्पण भी किया जाता है। ऐसा करने से व्यक्ति को पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इस दिन दान करने से घर में सुख-शांति व खुशहाली आती है।

तीन बेड़मी (कचौरी) , आलू की सब्जी, 1 इमरती, पानी की बोतल से कल्कि जी, हनुमान जी योग-योगिनियों और दुर्गा जी की योगिनियों का भोग मात्र साढ़े बतीस रू (32.50) पर पैकट।

दुर्गा जी 14 परांठे जब रोग समझ न आवे (परांठे ₹ 98 +दक्षिणा ₹20)......................₹118

माँ बगुलामुखी 5 पीले परांठे (परांठे ₹ 35 + दक्षिणा ₹20).................................... ₹55

वासुकि जी का बेसन का लड्डू दो चाकू से लड्डू के 5 टुकड़े करके(1 लड्डू ₹ 6+ दक्षिणा)..... ₹7

अस्पताल कारण व बेकारण जाने से पहले अथवा पहुँचकर जल्द कुशल घर आने हेतु 5 उपचार मानसिक अथवा नकद ....₹250 संकल्प

1. हनुमान जी की योगी-योगनियों के .... ₹129
2. भैरों बाबा की शराब के .... ₹ 80
3. योगमाया महारानी के .... ₹20
4. दुर्गा जी 14 परांठे -..दक्षिणा ₹20
5. माँ बगुलामुखी 5 पीले परांठे ....₹20

<u>भैरों बाबा 4 रोट</u> (भगवान श्री कल्कि द्वारा बताया गया ₹20 प्रतिदिन भूत, प्रेत, पिशाच शक्तियों से रक्षा हेतु प्रार्थना और बुद्धवार को 4 मीठी रोटी(मोटे रोट चीनी और सौंफ डालकर) भैरों बाबा/श्री कल्कि जी / हनुमान जी के आगे दक्षिणा सहित चढ़ाकर कहें कि इसे भैरों बाबा के पास भिजवा दें। (रोट ₹40+₹20 दक्षिणा)..₹60

<u>श्री हनुमान जी</u>– चोला सिंदूर अन्य सामग्री प्रसाद दक्षिणा सहित–.....................................₹150

<u>बोल कबोल, जन्म दिवस, शादी की सालगिरह आदि</u>

ऑनलाईन कल्कि जी की सत्संगमयी चौंकी– रविवार प्रात: 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक

लगभग 125 बच्चें व बड़े कल्कि जन। अभिनय+ प्रसादम...₹5100

पितृ/पित्री – सीधा, रूमाल, गोला, धूप, पानी बोतल व दक्षिणा ....₹70

लेडिज़ / जेंटस वस्त्र के लिए ....₹330

काली जी का गोला(गट) 11 लोंग के जोड़े, 1जायफल, 2 सुपारी, पंच मेवा, कपूर की डली, इलायची व ₹ 5 दक्षिणा (पैनल व अन्य सहयोग) सहित ....₹ 50

काली जी स्वपन में खून दिखने व करने पर संकल्प करके चढ़ाएं अथवा चढ़वाएं ....₹130

विक्रम बेताल (शराब भैरों जी को चढ़ेगी) जब समस्या काबू से बाहर हो रही हो ....₹ 547

गणेश जी (जब काम में रूकावट आ रही हो)संकल्प ....₹1, 2 सफेद बर्फी

ढूढों गणेश जी जब सामान न मिले.. ₹1 और 2 बताशे अथवा ₹20

योगमाया जी संलग्न दुर्गा जी (जब काम में बड़ी रूकावट हो) संकल्प ₹10 और 15 इमरती उड़द दाल की ....₹105

दुर्गा जी संलग्न योगमाया जी (जब काम में बड़ी रूकावट हो)वास्ते संकल्प ₹10 एवं 64 इमरती उड़द दाल की ....₹ 448

पूर्णमाशी भंडारा कोलकाता बालवाटिका द्वारा संचालित (महावीर भैया) ....₹ 165

गौमाता (गाय धन की देवी है) खुले पैसे के लिए कुशल गृहणी है तो पहली रोटी गाय माता की) पुरूष वर्ग शुभ/दान के रूपयों से मासिक.. ₹500

मृत्यु के अनुभव आने पर यम की शक्तियों के लिए ₹1 व 2 बताशे कल्कि जी को चढ़ा दे या चढ़वा दें।

कोरोना से संबंधित सभी उपचार

1. विक्रम बेताल ....₹ 547

2. योगमाया जी संकल्प ....₹10 और 15 इमरती उड़द दाल की

3. दुर्गा जी संकल्प ....₹10 एवं 64 इमरती उड़द दाल की

4. अस्पताल जाने से बचाने हेतु ₹250 वाले 5 उपचार...₹ 360

क. ₹129 हनुमान जी की योगी-योगनियों के ख. ₹80 भैरों बाबा की शराब के

ग. ₹20 योगमाया महारानी के घ.दुर्गा जी 14 परांठे -दक्षिणा ₹20(माँ मैं नहीं जानता इन्हें क्या बीमारी है आप जानो इन्हें बचाओ)

ड..माँ बगुलामुखी 5 पीले परांठे-दक्षिणा (माँ मैं नहीं जानता इन्हें क्या बीमारी है आप जानो इन्हें बचाओ)

5. श्रद्धा से ईंटों के निमित्त सम्भल में ₹15,000 जो श्री कल्कि ने सुश्री रश्मि गनेरीवाल (कोलकाता) से पति को बचाने को कहे (अथवा जैसी साम्थर्य हो) मात्र 10 ₹ प्रतिदिन, सम्भल में दबी शक्तियां मुक्ति के लिए आतुर- निकलने पर आर्शीवाद

6 गुलाब का फूल व दूब गणेश जी के लिए...₹10,

7. ₹10 शंकर जी का अभिषेक

8. ₹1वासुकी जी का लड्डू (5 टुकड़े 2 चक्कू से करके)

9. ₹10 व 2 सेब दो-दो कट लगाकर गंगा महारानी को चढ़ा दें

10. ₹10 दक्षिणा व 1 साड़ी मनसा देवी (सिर्फ एक बार)यह सांपों की देवी हें। शंकर जी की मूँह बोली बेटी। यह साड़ी शंकर जी को चढ़ेगी वह इनके पास भेज देंगे।

11. सूर्य भगवान व इंद्र देव- ₹1-1 व 2 बताशे इनके फेफड़ों पर से निमोनियां ठीक करें।

12. ₹1 व 2 बताशे,पवन देव/वायु देव इनके फेफड़ों में अच्छी वायु देकर कोरोना हटाओ।

13. अनुभव में भगवान ने बताया 5 बूंद अमृतधारा की आधे गिलास कुनकुने पानी में मिलाकर पीने को (वास्तव में उसे लेने से फर्क पड़ा)

14. पौना गिलास गर्म पानी में चौथाई चम्मच पिसी फिटकरी मिलाकर या फिटकरी की डली घुमाकर गरारे करने से गले से बलगम हटता है। सांस सही आती है।

तांत्रिक सामग्री का माँ काली का गोला

—लेखिका एवं प्रभारी : सुश्री निशी गर्ग (9990485395)

बच्चों / साथियों,

काली माँ

काली जी का गोला
संपूर्ण तांत्रिक सामग्री सहित

काली माँ प्रथम महाविद्या तंत्र की अधिष्ठात्री देवी , समय और मृत्यु की स्वामिनी हैं। काली जी का गोला संपूर्ण तांत्रिक सामग्री (2 सुपारी,1 जायफल, 2 छोटी इलायची, 11 लौंग के जोड़े (22 लौंग) पंच मेवा (बादाम,किशमिश,छुआरा,मखाना,काजू)एक कपूर की टिकिया, के साथ सारे सामान को गट–गोले में भरकर कसकर कलावे से बांध कर तैयार किया जाता है। यह धूने का गोला हवन कुण्ड, काली जी के भोग के कुण्ड/घर के हवन कुण्ड /अथवा प्लेट में खुले में भी रखकर कपूर डालकर प्रज्वलित कर सकते हैं। ऐसा करने से कल्कि जन विभिन्न परेशानियों से निकले और निकल रहे हैं जैसे:–

.1 अकारण घर में बेवजह तांत्रिक शक्तियों द्वारा मनमुटाव व क्लेश पैदा करवाने पर
2. अनुभव में दुर्घटना, खून–खराबा, चोरी–डकैती या आतंकवादी घटनाएं दिखने पर
3. राक्षसी, अघोरी, तांत्रिक, अतृप्त शक्तियों के चंगुल से छुटकारा पाने के लिए
4. कोई सरकारी बड़ा झमेला पड़ने पर
5. अपनी असुरक्षा का भाव आने पर जीवन रक्षाा के लिए

मंत्र एवं प्रार्थना:–''ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाए विच्चै स्वाहा'' काली जी के इस मंत्र के द्वारा गोला हवनकुंड में अर्पित कर प्रार्थना करे कि हे माँ! मैं यह तांत्रिक सामग्री वाला गोला ₹5/ ₹10 दक्षिणा सहित आपके भोग के निमित्त–हवन सामूहिक अथवा घर, (कालका जी मंदिर या हर काली मंदिर) या

माँ काली को कालका मंदिर में भोग

परिस्थिति विशेष में किसी पात्र में रखकर कपूर बुरक कर अग्नि प्रज्वलित करके दूंगा। हे माँ! जो भी कलियुगी राक्षसी तांत्रिक अघोरी शक्तियां मेरे और मेरे परिवार जनों के मन में और मेरे व्यापार पर विषैले नागों की तरह चौकड़ी मारकर बैठ गई हैं(अन्य कोई भी परेशानी हो तो बोल दीजिए)उनको मैं इस गोले में आपको दे/भिजवा रहा हूँ/ रही हूँ।

हे करूणामयी माँ! आप उनका भक्षण कर उन शक्तियों को जिन्होंने मेरे यहाँ भेजा है उन्हीं के यहाँ अथवा उनके लोकों में वापस भेजिए जहाँ वह रहती हैं। हे माँ! मैं कल्कि जी का हूँ/की हूँ, मैं कल्कि जी का काम कर रहा हूँ/ रही हूँ। मुझे रास्ता दीजिए। मेरा जीवन सरल बनाइए। जिससे मैं भगवान श्री कल्कि के प्रचार का कार्य सुखी भाव से स्वस्थ शरीर से सफलता पूर्वक वैभवता पूर्वक (धन,संपदा,ऐश्वर्य,भक्ति,ज्ञान) कर सकूँ। कल्कि भगवान तो असंभव को संभव करने वाले हैं। उन्हीं के निर्देशानुसार भक्तों की सुरक्षा के लिए काली जी का गोला सभी भक्तों के द्वारा हवनकुण्ड में अर्पित हो सके इसके लिए यह प्रोजेक्ट शुरू किया है। इससे कल्कि भक्त घर बैठे ही वर्चुअल ऑनलाईन (नीचे दिए श्री कल्कि बाल वाटिका फाऊंडेशन पे टी एम नंबर(8860231077)पर पैसा भेजकर) घर में ज्योत जगाकर हथेली में गंगाजल/जल–चावल लेकर संकल्प प्रार्थन करके काली जी के गोले की बुकिंग करा सकते हैं। हवनकुंड में भक्त स्वयं करें अथवा भक्तों के नाम के साथ गोला अर्पित किया जाएगा। अन्य भक्त भी हवन स्थल पर से तैयार गोला ले सकते हैं। यह गोला कल्कि भक्तों का नाम लिखकर प्लास्टिक के लॉक वाली थैली पर नाम,मोबाईल नंबर व तारीख लिखकर रखा जाता है। दक्षिणा ₹5 हवन की वेदी पर अलग रखी जाती है। **''ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाए विच्चै स्वाहा''** काली जी के इस मंत्र के द्वारा गोला हवनकुंड में अर्पित किया जाएगा।

विशेष:– काली जी का गोला दक्षिणा सहित ₹50 का क्यों?

क्योंकि माँ काली का गोला लगभग ₹65 के स्थान पर 50 का इसलिए दिया जाता है कि जो कल्कि समाज के कार्यकर्ता एवं श्री कल्कि बालवाटिका ट्रस्ट को दिल्ली कोलकाता हैदराबाद, अपना सहयोग देते हैं उस योगदान में से हमारे अन्य प्रोजेक्टस की तरह उन्हें भी गोले की पूर्ति में से फल और तेज मिले।

9. मेरी विपदा में बन जाओ प्रभु

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक प्रभु श्री कल्कि जी से विनती कर रहे हैं कि हे रमापति मैं आपकी शरण में हूँ अब तो मुझे दर्शन दो। आप निराशा में आशा की किरण हो और निर्बलों के सहारे हो हे दीनानाथ मेरा बेड़ा भी पार कर दो। आप दुखियों के दु:ख में हमेशा आए हो । हे श्री कल्कि मैं दुखिया तुम्हें पुकार रहा हूँ आप शीघ्र आवें।

मेरी विपदा में बन जाओ प्रभु सुख और सहारे
शरण हूँ मैं तुम्हारी दर्श दो हे कल्कि प्यारे
निराशा में बनो आशा, अंधेरे में उजाले
बनो उन निर्बलों के बल जो कहलाएँ तुम्हारे
शरण हूँ मैं तुम्हारी...... ॥ 1 ॥

विनीतों की व्यथा में तुम अनेकों बार आए
रमापति आज भी आकर करो ये बेड़ा किनारे
शरण हूँ मैं तुम्हारी··· ॥ 2 ॥

10. भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक कह रहे हैं कि प्रभु भूमि का भार उतारने के लिए आपने हर युग में कभी राम कभी कृष्ण का अवतार लेकर राक्षसों का संहार किया। इस कलियुग में भी कलि आपके भक्तों को अपनी चपेट में लेकर सता रहा है और आपके भक्त उससे अत्याचारों से बचने के लिए निरंतर आपको पुकार रहे हैं। हे दीनानाथ आप उनसे क्य दूर हो? उनकी पुकार क्यों नहीं सुन रहे हो? आप शीघ्र अवतार लेकर प्रगट हों।

भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार भार हरते
दानव दुष्टों का करके संहार भार हरते

राघव राम बन आए, माधव कृष्ण कहलाए
महिमा वेद भी गाए, तुम्हारा पार ना पाए
तुम हो जग के करतार भार हरते

भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार··· ॥ 1 ॥

अपने दीन भक्तों से अब क्यूं दूर हो भगवान
जो हैं रात दिन करते तुम्हारे नाम का सुमरन
जिन की सुन कर पुकार भार हरते
भूमि का प्रभु तुम··· ॥ 2 ॥

11. अब तुम से लगी है आस

अब तुम से लगी है आस
करो प्रभु नाश दुष्ट दल सारा
हम को है गर्व तुम्हारा

जो शरण तुम्हारी आते हैं
वह अमिट सदा सुख पाते हैं
मिल जाता है सब कष्टों से छुटकारा
हमको है गर्व तुम्हारा ॥ 1 ॥
भरमार यहाँ पापों की है
और बुरी दशा गौओं की है
क्यूँ ना हे स्वामी तुमने इन्हें निहारा
हम को है गर्व तुम्हारा ॥ 2 ॥
चुप क्यूँ हो खड्ग उठाओ ना
वह अपने वचन निभाओ ना
जिन शब्दों का अर्जुन ने लिया सहारा
हम को है गर्व तुम्हारा ॥ 3 ॥
आँखों में ऐसे छाए हो
और मन को ऐसे भाए हो

जैसे चकोर को चाँद लगे है प्यारा
हम को है गर्व तुम्हारा ॥ 4 ॥

12. था अजामिल एक पापी

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक कह रहे है कि प्रभु जैसे आपने अजामिल नाम के पापी को भी अंजाने में नारायण नारायण कहने पर मुक्ति दे दी उसी प्रकार मुझ दीन हीन पर भी अपनी कृपा करो। मैं भी आपके द्वार पर मुक्ति के लिए खड़ा हूँ।

था अजामिल एक पापी जिस पे तुमने की दया
नाम नारायण लिया था पार बेड़ा हो गया
नाथ हम भी आज आए हैं तुम्हारे द्वार पर
दीन हैं दुख दूर कर दो दास अपना जान कर
भक्ति से भरपूर भगवन दो हमें जीवन नया

13. राह काँटों से भरी

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक भगवान से विनती कर रहे हैं कि ये संसार कांटों भरी राह है मैं इस पर चलकर थक गया हूँ लहूलुहान हो गया हूँ। मेरा भी उद्धार करो जैसे आपने गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या का उद्धार किया,प्रहलाद की रक्षा के लिए नरसिंह अवतार लिया, राम रूप में आपने भिलनी का मान बढ़ाया, वन में ऋषियों के यज्ञ की रक्षा की, पुत्र की भाँति जटायु का अंतिम संस्कार किया वैसे ही हे दीनानाथ मेरी भी मुक्ति करो।

राह काँटों से भरी,
सामने आओ हरी,
मैंने भी विनती करी.......

तुम दयालु हो बड़े
पाँव पत्थर पर पड़े
नारि गौतम की तरी

मैंने भी विनती करी......

भक्त ने तुम को रटा
जोर से खम्बा फटा
तुम बने नरकेसरी
मैंने भी विनती करी.......

मान भिलनी को दिया
की जटायु की क्रिया
ऋषियों की विपदा हरी
मैंने भी विनती करी.......

14. बेसहारों के सहारे हो कहाँ

भावार्थ: भजन में लेखक भगवान श्री कल्कि से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे नाथ मेरी नैया इस संसार रूपी सागर में डगमगा रही है इस अथाह सागर के किनारे पर पहुँचना भी जरूरी है। इस भव सागर के किनारे तो आप ही हो। अपने लक्ष्य पर पहुँचने से पहले मरी नैया को भँवर में डूबने से बचा लो।

बेसहारो के सहारे हो कहाँ
कल्कि भगवान हमारे हो कहाँ
नैया मझधार में है डोल रही
गहरे सागर के किनारे हो कहाँ
कल्कि भगवान··· ॥ 1 ॥

चले आओ ना प्रभु देर करो
कोई लाचार पुकारे हो कहाँ
कल्कि भगवान··· ॥ 2 ॥

यह तुम्हें ढूँढ रही हैं आँखें
बोलो हे नन्द दुलारे हो कहाँ
कल्कि भगवान··· ॥ 3 ॥

देखलो आके दुखी मन की दशा

सोई किस्मत के सितारे हो कहाँ
कल्कि भगवान''' ॥ 4 ॥

15. पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ

पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ
मन तुम्हें पल-पल पुकारे हो कहाँ
बह चला बेड़ा विपद की बाढ़ में
शोक सागर के किनारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे''' ॥ 1 ॥

बे सहारों को सहारा चाहिए
बे सहारों के सहारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ
मन तुम्हें पल-पल पुकारे हो कहाँ
हम तुम्हारे है दुखी है दीन है
दीन दुखियों को बिसारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे''' ॥ 2 ॥

नैन है बेचैन दर्शन के लिए
सामने आओ हमारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ
मन तुम्हें पल-पल पुकारे हो कहाँ
चाकरी की कामना मन में लिए
हम खड़े दर पर तुम्हारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे''' ॥ 3 ॥

16. दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों

दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों की निहार के
अब आओ जी कल्कि प्रभु स्वामी संसार के
पाप यहाँ सन्ताप यहाँ, माया की मन पर छाप यहाँ
तुम्हें जग भूल गया, पैसे का है जाप यहाँ
हम तो बैठे है मन मार के जी मार के
अब आओ जी कल्कि प्रभु स्वामी संसार के
दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों ... ॥ 1 ॥
भार हरो संहार करो और भक्तों के भंडार भरो
धर्म की जीत होवे, ऐसा चमत्कार करो
तुम हो आधार निराधार के
अब आओ जी कल्कि प्रभु स्वामी संसार के
दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों... ॥ 2 ॥

17. प्रभुजी प्रभुजी तुम सुन लो टेर हमारी

प्रभुजी प्रभुजी तुम सुन लो टेर हमारी
सेवा भक्ति बने नहीं हमसे हे दीनन हितकारी
तुम सुन लो टेर हमारी

जिसका कोई नहीं है अपना, तुम हो अपने तुमको जपना
सीख लिया प्रभु इस जीवन में, तुम हो अपने तुमको जपना
दूर करो अंधियारी, तुम सुन लो टेर हमारी
प्रभुजी प्रभुजी तुम··· ॥ 1 ॥

देर करो ना आओ आओ, आ भक्तों को दरश दिखाओ
कल्कि मंडल चिन्तक सारे, आए शरण तुम्हारी
प्रभुजी प्रभुजी तुम··· ॥ 2 ॥

18. ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया

ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया
घर छूटा परदेस में आया
जब शिशु आँखे खोले
या कुछ मुँह से बोले
उससे पहले मोहिनी माया
उसको आकर मोह ले
मोह ने सारा ज्ञान भुलाया
ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया...
ऋषि मुनि योगी सारे
इस माया से हारे
इससे कोई बिरला जीते
जो हरि नाम पुकारे
नाम को वेदों ने सार बताया
ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया..

19. लोग कहते हैं कि मुद्दत से ये कल्कि वाले

लोग कहते है कि मुद्दत से ये कल्कि वाले
कल्कि कल्कि ही न जाने क्यों रटा करते हैं
क्या पता उनको कि इस नाम की दुधारी से
धर्म के बैरी कहीं भी हो कटा करते हैं
लोग कहते है कि...
अपने गुरुदेव से हमको तो यही नाम मिला
जिन्दगी भर के लिए सच्चा सही काम मिला

एक कल्कि के सिवा नाम रटें दूजा क्यों
छोड़ कल्कि को करें और की हम पूजा क्यों
हमको पृथ्वी का अभी भार उतरवाना है
सत्य युग लाए बिना चैन कहाँ पाना है
क्या पता उनको कि कलि काल के काले बादल
नाम कल्कि की हवा से ही हटा करते है
लोग कहते है कि··· ॥ 1 ॥

धर्म के नाम पे जब पाप पनप जाते है
त्याग तप संयम नियम जिस दम कि खप जाते हैं
टूट जाती है सभी शास्त्र की मर्यादाएँ
भक्ति को छोड़कर नर भोगों में भरमा जाएँ
आए बिन ऐसे में भगवान नहीं रह सकते
अपनी मर्यादा का अपमान नहीं सह सकते
क्या पता उनको अमन चैन की आवाजों में
दम नहीं रहता कि जिस दम बम फटा करते हैं
लोग कहते है कि··· ॥ 2 ॥

20. मुरली भी सुनेंगे देखेंगे

मुरली भी सुनेंगे देखेंगे मोहन की मनोहर लीलाएँ
पहले तो वो कल्कि बनकर भू-भार हटाने को आए
यहाँ रोज सुबह के होने तक कट जाती है
लाखों गायें कुंज गलियों की रंग-रलियों में
दिल पत्थर हो तो खो जाए सीने में
हो जिनके आग उन्हें सावन की मल्हारें क्यों भायें
वे चैन से बैठे क्यूँ तब तक संहार न जब तक करवायें

मुरली भी सुनेंगे देखेंगे... ॥ 1 ॥
बृजराज रहे बृज में सुख से क्यूँ शस्त्र उठाए दुख पाए
उन्हें छोड़ दे उनकी किस्मत पर कलिकाल से जो जा टकराए
मुरली भी सुनेंगे देखेंगे... ॥ 2 ॥
वे रास रचाए मधुवन में माखन खाए मिश्री खाए
गौओं से उन्हें जब नेह नहीं गोपाल न फिर वो कहलाए
मुरली भी सुनेंगे देखेंगे... ॥ 3 ॥

21. दिन है दो चार भजन के

दिन है दो चार भजन के तेरे जीवन के जो नर तर जाना है
कोई करके अच्छी सी करनी पाया मानुष तन
फिर भी न बैठा ले के सुमरनी भाया तुझे पशुपन
चरणों में चित भगवन के लगाओ दास बनके
जो नर तर जाना है दिन है दो चार भजन के··· ॥ 1 ॥

काल बलि है श्री कल्कि स्वामी जन्में है संभल
दूर करी भारत की गुलामी उनके दरश को चल
पथ छोड़ दे उलझन के अशुभ दर्शन के
जो नर तर जाना है दिन है दो चार भजन के... ॥ 2 ॥

22. जहाँ जहाँ गंगा बहती है

जहाँ जहाँ गंगा बहती है गंगा बहती है
धरती पर वहाँ-वहाँ मुक्ति के संग भक्ति रहती है
जहाँ-जहाँ गंगा बहती···

राजा भगीरथ ने जिसके लिए तप किया
भागीरथी, वो कहाई यहाँ
जहाँ-जहाँ गंगा बहती··· ॥1॥

है जन्म जिसका अजन्मा के नख से हुआ
ऐसी कहीं, और सरिता कहाँ
जहाँ-जहाँ गंगा बहती··· ॥2॥

जो स्नान जलपान दर्शन करे वो तरे
गायें सभी, वेद महिमा महां
जहाँ-जहाँ गंगा बहती··· ॥3॥

23. प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा

भावार्थः प्रस्तुत भजन में लेखक आततायी और अत्याचारियों को समाप्त करने के लिए प्रभु श्री कल्कि से युद्ध में उतरने का आवाहन करते हुए कह रहे है कि अत्याचारी और आसुरी शक्तियां हमारे भारत देश को बहुत कष्ट दे रहे हैं है। इन्हें समाप्त करने के लिए प्रभु आपको आना पड़ेगा। हमने कलियुग को ललकार तो दिया है लेकिन आपके बिना हम बहुत असहाय है इन्हें समाप्त करना हमारे वश का नहीं है। आप ही आकर इनका विनाश करके सुख चैन बरसाओगे।

प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा
विरोधी विश्व पर छाना पड़ेगा
अधर्मी आतताई बढ़ गए हैं

उन्हें यमलोक पहुँचाना पड़ेगा,
प्रभु रण में तुम्हें ॥ 1 ॥
जो तुमने देर आने में लगाई
हमें निरुपाय हो जाना पड़ेगा,
प्रभु रण में तुम्हें ॥ 2 ॥

उठा लो हाथ में अब उस खड्ग को
जिसे दुष्टों से टकराना पड़ेगा
प्रभु रण में तुम्हें ॥ 3 ॥

24. आओ कल्कि तलवार ताने

आओ कल्कि तलवार ताने गौवों भक्तों की सुध पाने
धर्म वह तुम को था जो प्यारा ना जाने किस और सिधारा
शास्त्र की आज्ञा कोई न माने
आओ कल्कि... ॥1 ॥

जी बैठा जाता है तुम बिन ऐसे आए हैं
अब दुर्दिन बाढ़ लगी है खेत को खाने
आओ कल्कि... ॥ 2 ॥

चमके जैसे सूर्य गगन में चमको वैसे
अब तुम रण में आपके बल को दुनिया जाने
पाप के फल को दुनिया जाने
आओ कल्कि... ॥3 ॥

25. स्वासों के संग में उठती उमंग में

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक श्री कल्कि जी की छवि को अपनी आत्मा में अंकित कर प्रार्थना कर रहे है कि मेरी तो हर सांस में आप ही समाए हुए है। प्रभु आपकी इस मनोहारी छवि के सहारे मैं अपना पूरा जीवन व्यतीत कर दूंगा। मैं तो केवल आपके दर्शनों का अभिलाषी हूँ। मुझे अपने दर्शनों देवें।

स्वासों के संग में उठती उमंग में छाओ समाओ मुरार
हरि मैं तो करूँ तुम से विनय बार-बार

बाँके बिहारी मैं झाँकी तुम्हारी, निहारूँ हृदय में उतार
बन के पुजारी मैं सेवा में सारी, दूँ जीवन की घड़ियाँ गुजार
तोड़ो न आशा के तार,
हरि मैं तो करूँ तुम से विनय बार-बार॥1॥

सिर पे मुकुट लंबी अलकों की लट,
वैजयन्ती गले में हो माल माथे तिलक मोहनी हो झलक,
मद भरे नैन धीमी हो चाल पलकों में छलका हो प्यार,
हरि मैं तो करूँ तुम से विनय बार-बार॥2॥

26. बिगड़े हुए जिसके हों दोनों जहाँ

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक श्री कल्कि भगवान से प्रार्थना कर रहे है कि हे नाथ! आप दाता हो और मैं भिखारी हूँ यदि आपके दर पर भी मुझे आसरा न मिला तो में कहाँ जाऊँगा। मेरे तो लोक-परलोक दोनों ही बिगड़े हुए हैं मुझ दर-बदर को भटकते हुए को अपने चरणों में जगह दो।

बिगड़े हुए जिस के हों दोनों जहाँ
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
जिसका है ठिकाना यहाँ न वहाँ
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
भगवान भटकते राही को
अपने चरनों में जगह दे दो
है कहीं न कोई जिसका मकां
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
बिगड़े हुए जिस के हों... ॥1॥
तुम सारे जग के दाता हो
मैं भिखारी बन के आया हूँ
झोली रही खाली जिसकी यहाँ

अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
बिगड़े हुए जिस के हों॰॰॰॥2॥

27. हे काल रूप कल्कि प्यारे

भावार्थ: कल्कि जी के भजनों में एक जो विशेष बात है वो है पुकार। उनके भक्त हो या कवि वो अपनी नहीं बल्कि समष्टि की चिंता से त्रस्त है। और पृथ्वी को बचाने के लिए उनसे आने का आग्रह बार बार करते हैं।
प्रस्तुत भजन में लेखक कल्कि जी से विनती कर रहे हैं कि हर पल पृथ्वी पर धर्म की हानि हो रही है। धर्म के ह्वास का यही हाल रहा तो ऋषि, मुनि, तपस्वी, ज्ञानी सब कहानियों के पात्र बनकर रह जाएंगे। पृथ्वी को विनाश से बचाने के लिए हम हर ओर से हार कर आपकी शरण में आए हैं हमें निराश मत कीजिए।

हे काल रूप कल्कि प्यारे हाथ में दुधारा धारे
पाप का विनाश कीजिये समय आ गया
प्रतिपल हो रही धर्म की हानि, अधम करें मनमानी
ऋषि मुनि योगी ज्ञानी साधु तपस्वी दानी
सत्य का प्रकाश कीजिये समय आ गया॥1॥
आए हैं तुम्हारे द्वारे विपदा के मारे हुए
कहाँ हो बताओ स्वामी हमको बिसारे हुए
सब विधि हारे हुए और बेसहारे हुए
हे नाथ हम तो तुम्हारे हुए
हमें ना निराश कीजिये समय आ गया॥2॥

28. क्या दीन दुखी भक्तों को

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक कह रहे हैं कि जब जब भक्तों ने आपको पुकारा आप आए हो। जैसे आपने ध्रुव और मीरा के दु:ख हरे, अब मेरी बारी है तो क्यों आँखें चुरा रहे हो। हे कल्कि जी अब मेरी भी करूण पुकार पर आ जाओ।

क्या दीन दुखी भक्तों को
मोहन भूल गये।

टेरा ध्रुव ने और मीरा ने
आए कष्ट मिटाने।
हमरी बारी को तुम प्रभुजी
जी क्यों लगे चुराने ॥1 ॥

मन में आशा नयन हैं प्यासे
देखें मूर्ति सुहानी।
कल्कि मंडल कहें प्रभु सुन लो
हो रही धर्म की हानि ॥ 2 ॥

29. हे कल्कि भगवान तुम्हें अब

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक कह रहे हैं कि हे नाथ आप ही तो सतयुग के सम्राट हो। हिंदू जाति के अपमान, गऊओं और भारत वर्ष की ऐसी दुर्दशा देखकर भी आप क्यों चुप हो? आप तो तुरंत अश्व पर सवार होकर अधर्मियों और आतताईयों का वध कर शंखनाद करते हुए सतयुग की स्थापना करने आ जाओ।

हे कल्कि भगवान तुम्हें अब
भारत में आ जाना चाहिए
केवल हिन्दू धर्म छोड़कर
सबका ढोंग मिटाना चाहिए

हुआ पृथ्वी तल पर अन्याय
करोड़ों काटी गई हैं गाय
राजा बन गए चोर लुटेरे
सूली उन्हें चढ़ाना चाहिए
शासन स्वयं करो पृथ्वी तल
को फिर स्वर्ग बनाना चाहिए।

हे कल्कि भगवान… ॥ 1 ॥

जहाँ से जग लेता था ज्ञान
हो रहा उसका ही अपमान
भारत माता को बन्धन से
स्वामी मुक्त कराना चाहिए
पतित हुई हिन्दू जाति को
वैभव पर पहुँचाना चाहिए
हे कल्कि भगवान… ॥ 2 ॥

मची है कैसी आपा धापी
करें मनमानी निश्चर पापी
दानवता का दलन करो प्रभु
अब तो खड़ग चलाना चाहिए
अर्बी तुर्की यवन लेच्छ का
धड़ से शीश उड़ाना चाहिए
हे कल्कि भगवान… ॥ 3 ॥

धरणी पर राज्य अखंड बनाओ
सत्य युग का दरबार लगाओ
राजसूय यज्ञों की रचना कर
सम्राट कहाना चाहिए
सारे जग में सत्य सनातन
धर्म का ध्वज लहराना चाहिए
हे कल्कि भगवान… ॥ 4 ॥

कृपा कल्कि मंडल पर करो
कष्ट अपने भक्तों के हरो
पाञ्चजन्य का तुमुल घोष कर

अब घोड़ा दौड़ाना चाहिए
दलित दीन दुखिया भक्तों को
आकर हृदय लगाना चाहिए
हे कल्कि भगवान… ॥ 5 ॥

30. हमें अब दुख से उबारो हरि

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक कलियुग की भयानक स्थिति से दु:खी होकर श्री कल्कि से प्रार्थना कर रहे हैं कि सारे संसार में आसुरी माया फैल चुकी है, धर्म और जप-तप का लोप हो चुका है। अब तो हाथ में तलवार और अश्व पर सवार होकर दुष्टों का दलन करो और हमें अपना दर्शन देकर कृतार्थ करो।

नटवर नागरिया गिरधर सांवरिया
घोड़े चढ़के खड्ग उठाके
कल्कि पद्मा नाथ कहा के आओ दर्शन दो
नूतन जीवन दो सुनके वाणी विनय से भरी,
हमें अब दुख से... ॥ 1 ॥

फैली जग में आसुरी माया जीवों ने जप-तप बिसराया
तामस सृष्टि है वायस दृष्टि है आने में क्यूँ देरी करी,
हमें अब दुख से... ॥ 2 ॥

31. आये नहीं अब तक हुए वायदे सभी झूठे

आये नहीं अब तक हुए वायदे सभी झूठे
तुम हमसे रमा नाथ हो किस बात पे रूठे

नरसी का भरा भात मगर बात न टाली
साँवलिया बने सेठ कलम तुमने सँभाली

लिख डाले थे परवाने लगाये थे अँगूठे
तुम हमसे रमानाथ हो किस बात पे रूठे ॥1 ॥

भिलनी ने भरे टोकरे बेरों के जो खोले
भैया का समझ भाव प्रभु प्रेम से बोले
झूठे नहीं यह बेर हैं अनमोल अनूठे
तुम हमसे रमानाथ हो किस बात पे रूठे ॥2 ॥

सुग्रीव विभीषण को दिए राज तुम्हीं ने
लाचार की रखी सदा ही लाज तुम्हीं ने
आशाओं के तरु सूख के रह जाए न ठूंठे
तुम हमसे रमानाथ हो किस बात पे रूठे ॥ 3 ॥

32. कल्कि स्वामी आओ

कल्कि स्वामी आओ
तुम्हारे वियोग में हम दुख पाए इसका करो विचार,
मूर्ति तुम्हारी लगती प्यारी, जो है बसी निगाहों में

अब तो प्रभु प्रकट हो जाओ, यह ही पुकार आहों में
खड्ग लिये कर में चढ़ घोड़े, ना रहो हमसे मुख मोड़े
धर्म की डोर सँभालो आकर, तुम स्वयं इस बार
कल्कि स्वामी आओ''' ॥ 1 ॥

दूर हो तुम जितने सन्मुख से,उतने ही हम दूर हैं सुख से
देखे हम दरबार तुम्हारा, जिसके लिए मन विकल हमारा
कल्कि मंडल चिंतक के चित बसे तू ही साकार,
कल्कि स्वामी आओ''' ॥ 2 ॥

33. कल्कि जी करो हमारा ख्याल

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक प्रभु श्री कल्कि से विनती कर रहे हें कि इस संसार रूपी सागर में मेरी जीवन नैया दिशाहीन होकर डगमग डोल रही है। ये जीवन जंजाल बन गया है। ऐसे में हमारा दु:ख मिटाने के लिए अश्व पर सवार होकर हमें दु:खों से मुक्त करने आ जाओ।

कल्कि जी करो हमारा ख्याल
आओ प्रभु इस भव सागर से, लो तुम हमें निकाल
इस सागर की लहर-लहर में, आये बहुत उछाल
डोले नैया नहीं खिवैया, बहुत हुए बेहाल
कल्कि जी करो हमारा ख्याल··· ॥ 1 ॥
किसको सुनायें अपना दुख हम, जीना है जंजाल
तुम बिन प्रभु गुजरता जाता, एक पल बन कर साल
खड्ग लिए घोड़े चढ़ जाओ, खुद ही करो सँभाल
दुख मिटाओ अपने भक्तों के, नजर महर की डाल
कल्कि जी करो हमारा ख्याल··· ॥ 2 ॥

34. भूमि का उतारो भार नाथ

भावार्थ: भगवान श्री हरि ने पृथ्वी को वचन दिया था कि जब जब भी असुर उत्पन्न होकर पृथ्वी पर अत्याचार करेंगे तब तब धर्म और सज्जनों की रक्षा के लिए वह अवतार लेकर पृथ्वी को पापियों से मुक्त करेंगे। प्रस्तुत भजन में लेखक भगवान श्री कल्कि को यही प्रार्थना कर रहे हैं कि हे दशरथ नंदन राम! हे वासुदेव कृष्ण! प्रभु हर युग में आप ही पृथ्वी का भार उतारते आए हैं। कलियुग में धर्म के तीन पैर उखड़ गए है वह केवल एक पाँव के सहारे टिका है अब तो गऊ, विप्र और धर्म की रक्षा के लिए आप आ जाओ। गुरूवर बालमुकुंद जी ने निडर होकर आपकी जयजयकार कर आपके आने का उद्घोष किया है, फिर किस बात की देरी है। हमें भी अपना दर्शन देकर हमारा जीवन सफल कीजिए। हमें भी सतयुग और आपका दरबार देखने की प्रबल इच्छा है।

भूमि का उतारो भार नाथ पृथ्वी का उतारो भार
सुर नर मुनि प्राणाधार नाथ भूमि का उतारो भार
हे कृष्ण प्रभु मन हरण श्याम
दशरथ नन्दन अवतार राम
कल्कि स्वरूप को नित प्रणाम
करते हैं बारम्बार नाथ भूमि का उतारो भार॥ 1॥
कर खड्ग अश्व पर हो सवार
सुन्दर स्वरूप कल्कि मुरार
तुम किया हृदय में चमत्कार
मन फूल रहा कर दरश तुम्हारे अंग-अंग का श्रृंगार
नाथ भूमि का उतारो भार॥ 2॥
तुम कष्ट निवारण हारे हो
तुम गौ विप्रन के प्यारे हो
तुम ही आधार हमारे हो
जगमगा रहा तुमरे प्रताप से यह सारा संसार
नाथ भूमि का उतारो भार॥ 3॥
जब-जब भक्तों ने टेर करी
आये समीप नहीं देरी करी
दुष्टों को मार कर ढेरी करी
गौ भक्तों का दुख हरा रहे फिर निष्कलंक अवतार
नाथ भूमि का उतारो भार॥ 4॥
हे दीनबन्धु निज जन जीवन
अब करो सफल ले अपनी शरण
तुम से ही हमारी लगे लगन
करो ऐसी कृपा हे प्रभु हम सब
देखें कल्कि दरबार, नाथ भूमि का उतारो भार॥ 5॥
कल्कि मंडल ने किया जाप

गुरु बाल मुकुन्द जी का है प्रताप
होकर के निडर यह दिया छाप
आए कल्कि चरनन चिंतक बन
करलो जय जय कार, नाथ भूमि का उतारो भार॥ 6॥

35. असहाय हैं क्यों आज

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक ने गाय माता की दशा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है कि परलोक में जो गाय माता अपनी पूँछ के सहारे वैतरणी नदी को पार कराती है। पृथ्वी पर वही कत्ल होती गाय अपनी रक्षा के लिए आपकी ओर बड़ी ही आस से देख रही है। हे करूणा निधान! आप तो गोपाल है फिर आप क्यों नहीं आते आपके आए बिना न तो पृथ्वी का भार उतरेगा न ही पृथ्वी की गऊओं की रक्षा होगी।

असहाय हैं क्यूँ आज ये गोपाल की गाए
कोई तो इसे निर्दयी हाथों से छुड़ाए

जो जीवों को वैतरणी के उस पार उतारे
अपने ही लिये ढूँढ़ रही है वह सहारे
दुखिया पे दया आज किसी को भी न आए
कोई तो इसे··· ॥ 1॥
यह कैसा समय आया है कैसी घड़ी आई
प्रभु आपके प्यारों ने मुसीबत बड़ी पाई
कलि काल ने कैसे यह कठिन दिन हैं दिखाये
कोई तो इसे··· ॥ 2॥
भगवान आप बड़े दयालु हो कहाते
यह बात अगर सच है तो क्यों नहीं आते
हम राह में कबसे हैं खड़े नैन बिछाए
कोई तो इसे··· ॥ 3॥
हे कल्कि रमानाथ हे पद्मापति के प्यारे

उतरेगा नहीं भार बिना आए तुम्हारे
आ जाइए घोड़े पर चढ़े खड्ग उठाए
कोई तो इसे.......... ॥ 4 ॥

36. भगवान तुम्हारी दुनिया में

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक श्री कल्कि भगवान से विनती कर रहे हैं कि हे प्रभु मेरी अंधेरे जीवन में एक आप ही उम्मीद की किरण है। मैं बड़ी आस लेकर आपके पास आया हूँ मुझे खाली हाथ मत लौटा देना। मेरी जीवन रूपी नाव को मंझधार से पार लगा देना।

भगवान तुम्हारी दुनिया में दुखिया का सहारा कोई नहीं
जो दर-दर भटकने वाले हैं उनका निस्तारा कोई नहीं

तुम सब की सुनने वाले हो मेरी भी सुनो तो मैं जानूँ
कुछ तुम भी मुझ को पहचानो कुछ मैं भी तुमको पहचानूँ
पतवार बिना मझधार में इस किश्ती का किनारा कोई नहीं
जो दर-दर भटकने वाले हैं उनका··· ॥ 1 ॥

औरों की तरह अपने दर से तुम भी न मुझे लौटा देना
मैं आस लगा कर आया हूँ मुझे अपने दिल में जगह देना
इस अंधेरे में मेरी किस्मत का रोशन है सितारा कोई नहीं
जो दर-दर भटकने वाले हैं उनका··· ॥ 2

37. कौन कहता है घड़ा पाप का

भावार्थ: जो लोग कहते है कि अभी कल्कि कहाँ अभी तो उनके आने में 4 लाख बत्तीस हजार वर्ष हैं, उन्हें सावधान करते हुए लेखक लिखते हैं कि पाप का घड़ा भर चुका है और कल्कि जी पापियों को दण्ड देने के लिए अवतार ले चुके हैं। एक और महाभारत के लिए तैयार हो जाइए। उन्हें धर्म बहुत प्यारा है और उनके भक्तों ने धर्म की रक्षा के लिए उन्हें प्रगट कर लिया है। दुष्ट गऊ

भक्षी, आततायी कोई नहीं बख्शा जाएगा। कल्कि जी संहार के लिए निकल पड़े हैं।

कौन कहता है घड़ा पाप का भरपूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार के दिन दूर नहीं

बड़े खूंखार है वह लिये तलवार हैं वह
महाभारत के लिए खड़े तैयार हैं वह
सच पूछो तो अमन उनको है मंजूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार॥ 1॥

भक्त प्यारे हैं उन्हें धर्म प्यारा है उन्हें
भक्तों ने ही तो जमीं पे उतारा है उन्हें
देख सकते वो कभी भक्तों को मजबूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार॥ 2॥

38. जब दुनिया पाप कर पृथ्वी

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक बता रहे हैं कि यह संसार धर्म और मर्यादा पर ही चलता है लेकिन जब जब मनुष्यों ने धर्म की मर्यादा को भूलकर धरती को पाप की बस्ती बना दिया तो महा विष्णु ने श्री कल्कि अवतार लिया। जब पाप की बस्ती लंका बनी तब ऋषियों की पुकार पर प्रभु राम आए अब कलियुग में पाप की पराकाष्ठा अपनी चरम सीमा पर है तो भक्तों की पुकार पर श्री कृष्ण भी कल्कि रूप में दुष्टों के संहार को अपनी बांसुरी को तलवार बनाकर रण क्षेत्र में आ गए हैं।

जब दुनिया पाप कर पृथ्वी पर भार बन गई।
संहार हित सुरशक्ति भी साकार बन गई॥

तब राम को ऋषियों ने पुकारा था बार-बार
जब पाप की बस्ती समन्दर पार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी॥ 1॥

संसार में भगवान की भक्ति ही सार है
यह भूल कर सारी जनता मक्कार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी··· ॥ 2 ॥

श्री कृष्ण कल्कि बन कर हुए घोड़े पर सवार
जो हाथ में थी बाँसुरी तलवार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी··· ॥ 3 ॥

संदेश कल्कि जी का लाए बालमुकुन्द जी
वह वाणी कल्कि मंडल का आधार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी··· ॥ 4 ॥

39. उठो भारत जगाया जा रहा है

उठो भारत जगाया जा रहा है
समा सत्युग का आया जा रहा है

न कहना फिर हमें मालूम नहीं था
इसी से अब बताया जा रहा है
समा सत्युग का आया··· ॥1॥

हुए जो पाप धरती पे करोड़ों
हिसाब उनका चुकाया जा रहा है
समा सत्युग का आया··· ॥2॥

मचा घमसान कैसा है जहाँ में
कोई करता सफाया आ रहा है
समा सत्युग का आया··· ॥ 3 ॥

चढ़े हैं अश्व पर भगवान कल्कि
खड्ग का रौब छाया जा रहा है
समा सत्युग का आया··· ॥ 4 ॥

40. श्री कल्कि भगवान का दुधारा देखो

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक बताना चाह रहे हैं कि 64 कलाओं के स्वामी प्रभु श्री कल्कि की लीला को हल्के में मत लेना। कवि, कल्कि भगवान की दोधारी तलवार से होने वाले भीषण संहार का चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं जब महाकाल अपना मुँह खोलकर खड़ा हो जाएगा तब कल्कि जी की तलवार, देवराज इंद्र का वज्र, शिवजी का त्रिशूल, शेषनाग की फुंकार, और यम का दण्ड सब मिलकर ऐसा दानव दल का ऐसा सर्वनाश करेंगे कि पता नहीं चलेगा ये सूरज का ताप है या दावानल की आग। उस भीषण संहार की कल्पना ही बहुत भयावह होगी।

श्री कल्कि भगवान का दुधारा देखो
भीषण संहार का सितारा देखो
कितना कराल है कितना विशाल है
मुख महा काल ने पसारा देखो

मानों उठी दावानल ज्वाला
या है कोई सूर्य ही निराला
पुञ्ज प्रकाश का चिह्न विनाश का
शेष जी ने क्रोध से फुंकारा देखो
श्री कल्कि भगवान का··· ॥ 1 ॥

वज्र देवराज इन्द्र का है
यह त्रिशूल भाल चन्द्र का है
यम का यह दण्ड है प्रलयाग्नि खण्ड है
फूंकने को दानवी दल सारा देखो
श्री कल्कि भगवान का··· ॥ 2 ॥

41. डोल उठी पापों से धरती

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक श्री कल्कि भगवान के आने का प्रयोजन बताया हैं कि जब तामसिक सृष्टि का विस्तार होने से कलियुग के प्रभाव से

पृथ्वी पर हवन,यज्ञ,तप बंद होने लगे गऊओं को काटा जाने लगा और वर्णाश्रम का भेद मिट गया तब पृथ्वी को दिए अपने वचन के अनुसार धर्म की रक्षा के लिए कल्कि जी का आगमन हुआ।

डोल उठी पापों से धरती ऐसा भार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि अवतार हुआ
गिरधारी की गौवों का वैरी संसार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि अवतार हुआ

वर्णाश्रम मिट गए रहे ना शुभ आचार-विचार
सत्य सरलता पर छाया छल-कपट भरा व्यवहार
पर पीड़क बन कर मानव को हर्ष अपार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि··· ॥ 1 ॥

किधर गया वह भाव भजन में अब अनुराग नहीं
यज्ञ हवन हरि कथा कीर्तन जप तप त्याग नहीं
तामस सृष्टि हुई कलियुग का जब विस्तार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि·· ॥ 2 ॥

42. कल्कि जी जब कि घोड़े पर चढ़ के

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक का भाव है कि जो सर्वव्यापी विष्णु जो जगत के पालनहार है तो मर्यादाओं का उल्लंघन होने पर संहार भी करते हैं। कवि उस दृश्य की कल्पना कर रहे हें जब प्रभु श्री कल्कि घोड़े पर सवार होकर पापियों को दण्ड देने निकलेंगे तो उनकी भृकुटि के कंपन मात्र से ही ये धरती फट जाएगी, सागर उबलने लग जाएंगे। सूरज प्रचंड होकर तपेंगे और चंद्रमा की शीतलता से भी शोले लिकलेंगे। वह अकेले नहीं होंगे शिव की सेना और दुष्टों के रक्त की प्यासी महाकाली भी खप्पर लिए उनके साथ रण भूमि में होंगी। गौभक्षियों पर बिजलियां गिरेंगी। लेकिन इस भीषण संहार में भी जो दिव्यात्माएं उनकी शरण में जाएंगी उनका बाल भी बांका नहीं होगा ऐसा आश्वासन भी वो दे रहें हैं।

कल्कि जी जब कि घोड़े पर चढ़ के चल पड़ेंगे।
फट जाएगी यह धरती सागर उबल पड़ेंगे॥

जिस दम रमापति की आँखों में बल पड़ेंगे।
फट जाएगी यह धरती सागर उबल पड़ेंगे॥

नीचे उतर के सूरज लाखों गुना तपेगा।
और चाँद की नजर से शोले निकल पड़ेंगे॥
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 1 ॥

खूंखार होके काली खप्पर भरेगी अपना
खन्दक में मौत की जब दुष्टों के दल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 2 ॥

एक रूप की झलक पर एक तेग की चमक पर
है फर्क भक्त पापी दोनों फिसल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 3 ॥

वायदा किया उन्होंने गीता बता रही है
आऊँगा भक्त मेरे जब-जब निबल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 4 ॥

कल्कि जी आएंगे ही कुछ इसमें शक नहीं है
चलने को संग उनके शिव भी मचल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 5 ॥

गौओं के बैरियों पर जब बिजलियाँ गिरेंगी
सब देवता खुशी में भर कर उछल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 6 ॥

बरबादियों में उनका होगा न बाल बाँका
भगवान की शरण में जो आज कल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 7 ॥

43. जब स्वर्ग से प्राणी पतित हुए

जब स्वर्ग से प्राणी पतित हुए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
मृत लोक में आए रुक न सके
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा

सत्संग से और शुभ कर्मों से
पहुँचे थे ऊँचे लोकों में
जब भोगों से पुण्य समाप्त हुए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से··· ॥ 1 ॥

अब मिलता नहीं मिल जाए तो भी
सत्संग करना मुश्किल है
साधु जन पापों से पिछड़ गए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से··· ॥ 2 ॥

जब पाप से धर्म दबा देखा
तो कल्कि खड्ग लिए आए
सर दुष्टों के धड़ से अलग किये
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से··· ॥ 3 ॥

भक्तों ने सुना आए कल्कि
सुनते ही दरश को दौड़ चले
चरनों की रज पाने के लिए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से··· ॥ 4 ॥

४४. लीला अवतार की निराली होगी

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक उस दृश्य की कल्पना कर रहे हैं कि जब शिवजी की सेना साथ लेकर कल्कि जी अपनी तलवार चलाएंगे तो खून की नदियां बहेंगी। महाकाली हाथ में खप्पर लिए दानवों का रक्तपान करेंगी। चारों ओर महाविनाश की अग्नि होगी। लेकिन साथ ही सत्य और धर्म की हरियाली भी महक रही होगी। कल्कि अवतार का लक्ष्य धरती को असुरों से मुक्त कर सतयुग का प्रकाश लाना है।

लीला अवतार की निराली होगी।
धरती यह पापियों से खाली होगी॥
सिंह पर सवार महा काली होगी
खून की प्यासी खप्पर वाली होगी

शिवजी की सेना मतवाली होगी
आँखों में आग जैसी लाली होगी
शक्ति निधान ने कल्कि भगवान ने
कर में तलवार जब संभाली होगी
लीला अवतार की··· ॥ 1 ॥

सत्य धर्म की हरियाली होगी
गौओं भक्तों की रखवाली होगी
धर्म के राज में मानव समाज में
चारों तरफ खुशहाली होगी
लीला अवतार की··· ॥ 2 ॥

४५. नक्शा बदल देने को जमीं आसमान का

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखक कह रहे हैं कि गऊ भक्षियों को दण्ड देने और असुरों के साम्राज्य को ध्वस्त करने त्रिलोक पति कल्कि जी अपनी खड्ग लेकर निकल पड़े हैं। इस संसार के मानचित्र से अज्ञानता को दूर कर ज्ञान और भक्ति का प्रकाश फैलाएंगे।

नक्शा बदल देने को जमीं आसमान का
अब आया जा रहा है मालिक जहान का
खांडा पकड़ कर हाथ में घोड़े पर है सवार
कोई नहीं है जिनके बराबर की शान का
अब आया जा रहा है··· ॥ 1 ॥

दुनियाँ की बादशाहतें मिट्टी में मिला कर
सिक्का जमाएगा वह भक्ति और ज्ञान का
अब आया जा रहा है··· ॥2 ॥

पाला जिन्होंने जिस्म को गौओं के खून से
किस्सा मिटा देगा उनके नामो निशान का
अब आया जा रहा है··· ॥ 3 ॥

46. खड्ग मुरली बनी कल्कि बने बृजराज हैं

खड्ग मुरली बनी कल्कि बने बृजराज हैं आज
पाप से काँपती धरती की बने लाज हैं आज

अलकें घुंघराली घनी काली कमल सी आँखें
चित चुराती सी ये चितवन ये सरल सी आँखें
चढ़ के घोड़े पे समर में चले सरताज हैं आज
खड्ग मुरली बनी कल्कि·· ॥ 1 ॥

चांद सा मुखड़ा मनोहर पीत पट की शोभा
और माथे पे तिलक सिर पे मुकुट की शोभा

सभी शृंगार के अंग-अंग में सजे साज हैं आज
खड्ग मुरली बनी कल्कि... ॥ 2 ॥

47. पाप के ताप से पीड़ित पृथ्वी पहुँची वैकुण्ठ धाम

पाप के ताप से पीड़ित पृथ्वी पहुँची वैकुण्ठ धाम
श्री नारायण के चरणों में मिला उसे विश्राम
मुरझाया था उसका मुखड़ा, चैन बिना चित उखड़ा उखड़ा
काया दुर्बल दीन दशा थी, किसे सुनाती अपना दुखड़ा
उसका एक आधार बना था, संकट में हरि नाम
पाप के ताप से पीड़ित.........
संग में थे सुर नर मुनि ज्ञानी, प्रभु ने सबकी सुनी कहानी
करुणानिधि की करुणा उमड़ी, नर लीला करने की ठानी
वानर भालू बने सुर सारे, विष्णु बन गए राम
पाप के ताप से पीड़ित.......
दीनानाथ अवध में आए, कौशल्या के मन को भाए
राजा दशरथ भी हर्षाए, सबने हरि के दर्शन पाए
बालक रूप लुभाए सब के, नयनों को अभिराम
पाप के ताप से पीड़ित.......
ऐसी अनुपम हरि की झांकी, सुन्दर चेहरा चितवन बाँकी
जो भी देखे वही सराहे, खोज करें कवि जन उपमा की
नील सरोरुह और नीलमणि, नील नीर धर श्याम
पाप के ताप से पीड़ित...........

48. अपने भक्तों से हरि आज मिले आए के

अपने भक्तों से हरि आज मिले आए के
कल्कि कहाए के खड्ग उठाए के
जब देवों ने देखा जग में कलियुग का विस्तार है
धर्म कर्म सब बन्द हुए और पापों की भरमार है
भोगों में रत भजन भाव से विमुख हुआ संसार है
लाखों गौएं कटतीं अबलाओं पर अत्याचार है
देवलोक को तजकर सारे तब ब्रह्मा के धाम सिधारे
विधि से सकल कही विपद सुनाए के
अपने भक्तों से हरि" ॥ 1 ॥
बोले ब्रह्मा इन्द्रादिक से तब सब का उद्धार हो
जब धरती पर श्री गोलोक निवासी का अवतार हो
उनके द्वारा खल मलेच्छों का सामूहिक संहार हो
यह सब तब हो जब जाकर श्रीहरि के द्वार पुकार हो
विधि सम्मति सबके मन भाई धरती गौ रूप धर धाई
टेर जो लगाई क्षीर सागर में जाय के
अपने भक्तों से हरि" ॥ 2 ॥
श्री पति ने शोकाकुल सन्मुख देखा देव समाज को
बोले रक्खूँगा गौ ब्राह्मण सुर सन्तों की लाज को
कल्कि बन कर स्वयं संभालूंगा धरती के राज को
दुनिया भर के असुरों पर गेरूंगा गहरी गाज को
तुम सब जन्मों जग में जाकर कुछ दिन काटो कष्ट उठाकर
मम गुन गाओं कल्कि मंडल बनाय के
अपने भक्तों से हरि" ॥ 3 ॥
भारत की इस पुण्य भूमि में देवों का आगमन हुआ
कल्कि नाम के उच्चारण से असुर दलों का दमन हुआ

देश हुआ स्वाधीन दीनता मिटी यहाँ जब भजन हुआ
क्षीण हुई कलियुग की आयु सत्य शक्ति का सृजन हुआ
बालमुकुंद गुरूदेव हमारे
श्रीहरि के पवनपुत्र श्री हरि के प्यारे
सुजन उभारे कल्कि नाम धुन गाय के
अपने भक्तों से हरि¨ ॥ 4 ॥

49. कलियुग में जब कि कल्कि बने

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में कवि ने बांसुरी की इच्छा और चिंता को बड़े ही सुंदर ढ़ग से कहा हैं। कलियुग में जब श्री कृष्ण कल्कि रूप में आने की तैयारी करने लगे तो बांसुरी ने सोचा कि नारायण इस बार तो स्वयं ही दुष्टों के विनाश के लिए आ रहें हैं , वो भी योद्धा के रूप में ,अब तो उनके हाथ में तलवार शोभायमान रहेगी। तो क्या मुझे प्रभु का विरह सहना होगा? क्या मेरा मेरे प्रभु से नाता टूट जाएगा? तो उसने प्रभु से अपनी इच्छा प्रगट कर कहा कि प्रभु आपने अवतार का रूप बदला है प्रयोजन नहीं तो मुझे भी अपने से अलग मत करो। अब मैं तलवार बनाकर हमेशा आपके दाहिने हाथ में रहूंगी। आपके किसी काम आ पाऊँ इससे बड़ा सौभाग्य मेरा और क्या होगा? आप ठाठ से घोड़े पर सवारी करना और मैं खूंखार जालिम परिंदों के लिए बाज़ बनकर उनके जिस्म को चीरकर खून की नदियां बहा दूंगी। बस मुझे अपने अंग संग रखना। मुझे अनाथ करके मत चले जाना।

कलियुग में जब कि कल्कि बने कृष्ण मुरारी
तो बाँसुरी भी बन गई तलवार दुधारी
पोरी वह हरे बांस की हर दिल की दुलारी
तलवार ना बनती तो कहाँ जाती बेचारी
सोचा कहीं सरकार का संग छूट ना जाये
नाता जनम-जनम का कहीं टूट ना जाये
बैरी वियोग आके मुझे लूट ना जाये
मालिक मेरा नसीब कही फूट ना जाए

कहने लगी भगवान से दासी हूँ तुम्हारी
मुझको भी संग ले चलो कल्कि कृपाकारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 1 ॥
हरदम रहूँगी मैं तुम्हारे दहने हाथ में
तर जाऊँगी कर जाऊँगी कुछ काम साथ में
इतना ही चाहती हूँ तुम से प्राणनाथ मैं
जिंदा रहूँगी किस तरह होकर अनाथ मैं
तुमसे न बिछड़ जाऊँ है चिंता मुझे भारी
मेरी भी लाज रख लो आज बांके बिहारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 2 ॥
काटूँगी जालिमों के जिस्म तीर की तरह
बढ़ जाऊँगी मैं द्रोपदी के चीर की तरह
विक्रम दिखाऊँगी मैं महावीर की तरह
खूनी नदी बहाऊँगी मैं नीर की तरह
तुम ठाठ से करना, प्रभु घोड़े की सवारी
और देखते रहना मेरी जादूगरी सारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 3 ॥
गौओं के बैरियों के लिए गाज बनूँगी
खूंखार परिन्दे हैं वे मैं बाज बनूँगी
संसार में हिन्दू धर्म की लाज बनूँगी
जो कुछ कहोगे नाथ वही आज बनूँगी
जब तुम बनोगे काल महाकाल खरारी
छा जाऊँगी दुनिया पे मैं बन के महामारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 4 ॥
चारों तरफ गजब का घमासान मचेगा
सुमरन करेगा बस वही इन्सान बचेगा
दुनियां को नहीं पाप का सामान पचेगा

श्मशान भी भगवान आलीशान रचेगा
कलियुग खतम होने को है सतयुग की तैयारी
पत्थर के हरुफों में लिख लो बात हमारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 5 ॥

50. आओ भक्तों महिमा गायें श्री कल्कि भगवान

आओ भक्तों महिमा गायें श्री कल्कि भगवान की
जिनके यश का वर्णन करती वाणी वेद पुराण की
वे अविनाशी सब घट वासी सृष्टि के आधार हैं
गौ ब्राह्मण सुर सन्तों के हित हो जाते साकार हैं
मर्यादा की रक्षा करते हरते भूमि भार हैं
निज इच्छा निर्मित तनुधारी माया गुण गो पार हैं
कोई वस्तु नहीं जगत में है उनके उपमान की
जिनके यश का वर्णन... ॥ 1 ॥
ब्रह्मा जिनसे प्रेरित हो सृष्टि की रचना करते हैं
विष्णु पोषक बन कर जग जीवन को सुख से भरते हैं
शंकर बन विकराल काल के द्वारा सब कुछ हरते हैं
जिनके भय से शेष नाग धरती को सिर पर धरते हैं
उन्हीं प्रभु ने सूर्य चंद्र को उज्ज्वल ज्योति प्रदान की
जिनके यश का वर्णन... ॥ 2 ॥
देखो है अस्तित्व उन्हीं का त्रिगुण मयी इस माया में
जल थल में विस्तृत नभ में जड़ चेतन जीव निकाया में
चौदह भुवन त्रिलोक सर्वदा रहते जिनकी छाया में
प्राण पुरुष हैं वही एक इस पंच तत्व की काया में
वही प्रलय का खेल वही लीला रचते निर्माण की

जिनके यश का वर्णन... ॥ 3 ॥
तन मन धन से कर्म वचन से जो जन उनके दास हैं
उनमें उनकी सत्ता में रखते श्रद्धा विश्वास हैं
सुख में शील न खोते, होते दुख में नहीं उदास हैं
ऐसे सन्तों की सुधि लेने आए रमा निवास हैं
जय बोलो उन युग परिवर्तनकारी कृपानिधान की
जिनके यश का वर्णन... ॥ 4 ॥

51. श्री कल्कि नाम मन भाया है

श्री कल्कि नाम मन भाया है
इस नाम में ऐसी शक्ति है
जिसके हृदय में भक्ति है
दुनिया से करके पार उसे
देकर अपना आधार उसे
वैकुण्ठ धाम पहुँचाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है ॥ 1 ॥
अब भी है जन्म लिया जग में
हरि बने सहायक पग-पग में
भूमि का भार हटाने को
दुष्टों की खोज मिटाने को
निज कर में खड्ग उठाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है ॥ 2 ॥
भक्तों के हैं भोले स्वरूप
दुष्टों के है वे काल रूप
दुखियों के दुख हरने वाले

मेरी नाव पार करने वाले
सोते से हमें जगाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है॥ 3॥
अब देर नहीं है आने में
कल्कि के प्रगट हो जाने में
कल्कि मण्डल यश गाते हैं
चरनों में शीश नवाते हैं
गुरु बालमुकुन्द बतलाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है॥ 4॥

52. जो सुमरनी संभाल कर बैठे

जो सुमरनी संभाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे
वो जो कहने लगे कल्कि-कल्कि
कट गई जड़ कपट और छल की
आत्मा को निहाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे॥ 1॥
जोड़ा नाता जिन्होंने भजन से
कल्कि स्वामी के चरनों में मन से
मोह माया निकाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे॥ 2॥
उन्हें अनुभव में हमने देखा
मिटी मस्तक से दुर्भाग्य रेखा
अपना वैभव विशाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे॥ 3॥

तरे प्रहलाद ध्रुव बचपन में
जब श्रद्धा से मन के भवन में
दिया भक्ति का बाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे॥ 4॥

53. श्री कल्कि पद्मा नाथ जब सिंहासन

श्री कल्कि पद्मा नाथ जब सिंहासन पर विराजे
सब देवों के समाज ने बजाये मिलकर बाजे
नई उमंग से राग रंग में सबने मन रंग डाले
मची धूम त्रिभुवन में प्रगटे कल्कि संभल वाले
उदय हुआ सत्युग का आई पुण्य कर्म की बेला
चले नारि नर हरि दर्शन को पल में जुड़ गया मेला
आये उत्सव में ले लेकर भेटें राजे महाराजे
सब देवों के समाज ने बजाये मिलकर बाजे॥
श्री कल्कि पद्मा नाथ..........................॥ 1॥

शिव शंकर का डमरू बाजे नारद जी की वीणा
गणपत जी खरताल बजायें ढोल इंद्र ने छीना
बजे पखावज झाँझ घूंघरू ताली कल्कि नाम की
ऊँचे स्वर से सबने बोली आरती सुख धाम की
बजरंगबली ने करी गर्जना भक्तों के भय भागे
सब देवों के समाज ने बजाये मिल कर बाजे॥
श्री कल्कि पद्मा नाथ..........................॥ 2॥

54. न सत्संग को छोड़ो न सुमरन को छोड़ो

न सत्संग को छोड़ो न सुमरन को छोड़ो
कल्कि नाम गाओ पशुपन को छोड़ो

बिताओ समय उनकी आराधना में
जिन्हें भक्त पाते हैं शुभ भावना में
बसाओ सदा उनको निज कामना में
न पूजा को छोड़ो न साधन को छोड़ो
कल्कि नाम गाओ पशुपन··· ॥ 1 ॥

न भोगों से आत्मा को तृप्ति मिलेगी
तपस्या करोगे तो शक्ति मिलेगी
परम दिव्य शक्ति से भक्ति मिलेगी
न माला को छोड़ो न आसन को छोड़ो
कल्कि नाम गाओ पशुपन को छोड़ो.......

55. गाये जा निश दिन गुन गिरधर के

गाये जा निश दिन गुन गिरधर के
नटवर नागर श्याम सुन्दर के

वृन्दावन की रज मन भाई
जोगन बन गई मीराबाई
प्रीतम मिल गये प्रेम नगर के
गाये जा निश दिन गुन गिरधर के··· ॥1 ॥

जिसके मन में भक्ति जागी
उसने जग की तृष्णा त्यागी
कुन्दन बन गये भाव निखर के
गाये जा निशदिन गुन गिरधर के··· ॥ 2 ॥

56. जैसी करनी वैसी भरनी

जैसी करनी वैसी भरनी जो बोया सो पाना है
आज नहीं तो कल कर्मों का फल आगे आ जाना है

इसी नियम से बँधा हुआ है देखो यह सारा संसार
यहाँ किसी की जीत न समझो और न किसी की समझो हार
जीता यम के द्वार गया हारे का हरि ठिकाना है
जैसी करनी वैसी भरनी··· ॥ 1 ॥

दुख सुख बनकर जनम-जनम के करम सामने आते हैं
धूप छाँव की तरह हमारे जीवन में छा जाते हैं
स्वयं हमें अपने कर्मों से अपना भाग्य बनाना है
जैसी करनी वैसी भरनी··· ॥ 2 ॥

यहाँ गुमान न करना धरती धाम रतन धन जीवन का
काया राख बनेगी यह धन काम करेगा ईंधन का
जो कुछ देख रहे हैं हम सब में परिवर्तन आना है
जैसी करनी वैसी भरनी··· ॥ 3 ॥

जग में कुछ करने से पहले भले बुरे का करो विचार
उसको ही अपनाओ जिसको अन्तःकरण करे स्वीकार
सन्तों के संग रहो जिन्होंने परम तत्व पहचाना है
जैसी करनी वैसी भरनी··· ॥ 4 ॥

57. श्वांस में सुमरन समा गया

श्वांस में सुमरन समा गया
जब नाम हरि का जपा गया
सब ऋषि मुनि और योगी जन
हरि नाम की धुन में हुए मगन
जब मन का अन्धेरा मिटता चला
साक्षात् हुए प्रभु के दर्शन
सुख उपजा दुख चला गया
जब नाम हरि का जपा गया

58. भक्ति की ज्योति जगा हरि गुन गा

भक्ति की ज्योति जगा हरि गुन गा
कल्कि का प्रिय दर्शन पायेगा
कल्कि तेरी विपत हरेंगे
डोलती नैया पार करेंगे
सुमरन में मन को लगा
भक्ति को ज्योति जगा··· ॥ 1 ॥
कल्कि से तेरे पिछले नाते
आज भला क्यूं याद न आते
जाग जरा नींद भगा
भक्ति को ज्योति जगा··· ॥ 2 ॥

59. कल्कि कल्कि कहते जाना

कल्कि कल्कि कहते जाना
चित्त उनके चरनों में लगाना

कल्कि कहोगे सुख से रहोगे
भजन बिना मन दुख ही सहोगे
नाम रतन धन खूब कमाना
दोनों लोक बनाना,
कल्कि कल्कि··· ॥ 1 ॥

नवयुग के अवतार हैं कल्कि
आये हरने भार हैं कल्कि
दानवी जग होगा वीराना
तुम उनके मन भाना,
कल्कि कल्कि··· ॥ 2 ॥

60. सुप्तात्मा जगाकर परमात्मा को पा ले

सुप्तात्मा जगाकर परमात्मा को पा ले
परमात्मा को पाले जीवन सफल बना ले
वे हैं अनादि ईश्वर उनका सदा भजन कर
विश्वास रख उन्हीं पर दिन रैन नित निरंतर
चरनों में चित्त लगाकर अब तो उन्हें रिझालें
परमात्मा को पा लें जीवन सफल··· ॥ 1 ॥

सत्संग साधना से सुख के सुमन खिलेंगे
भक्ति उपासना से राधा-कृष्ण मिलेंगे
श्री कल्कि नाम गाकर अब तो उन्हें बुला लें
परमात्मा को पा लें जीवन सफल··· ॥ 2 ॥

61. फिर फिर आये जनम नित पाये

फिर फिर आये जनम नित पाये तृष्णा तुझे नचाये जग में

कट न सके संसार के बन्धन
मोह माया मद मार के बन्धन
अब भी यतन कर भक्ति भजन कर
तोड़ दे तू अहंकार के बन्धन
बिन हरि गाये विपत नहीं जाये
तृष्णा तुझे नचाये जग में... ॥ 1 ॥

बालकपन खेलों में खोता
यौवन भोगों में लय होता
जब आती है वृद्धावस्था
मृत्यु का कर दर्शन रोता
पाप कमाये धर्म नहीं भाये
तृष्णा तुझे नचाये जग में... ॥ 2 ॥

62. श्री कल्कि जपो रे मन

श्री कल्कि जपो रे मन भजो रे मन
काम कर लो भलाई के बुराई तजो रे मन
दुनियां ख्वाब है मालिक का खेल है
यह पल भर की मौज है पल भर का मेल है
हरी भरी सदा यहाँ धरम की बेल है
श्री कल्कि श्री कल्कि जपो रे... ॥ 1 ॥

पापों की राह में न जाना भूल के
मतवाले न बनो माया की धूल के

क्या लोगे मौत के झूले में झूल के
श्री कल्कि श्री कल्कि जपो रे॰॰ ॥ 2 ॥

63. मन भजन में रहो घर या वन में रहो

मन भजन में रहो घर या वन में रहो
मिली रसना कल्कि नाम गाने को है
सब रहेगा यही अपना कुछ भी नहीं
नाम ही अंत में काम आने को है
नाम पावन भी है मन भावन भी है
तप्त जीवन में सुख रूप सावन भी है
नाम का जाप कर पाप कट जाएंगे
क्रूर कलियुग के पांसे पलट जाएंगे
विश्व करतार कल्कि कहाने को है
मन भजन में रहो.............
साँवरे से लगन जो लगाने लगे
यूँ कहो भाग्य अपने जगाने लगे
बिन भजन मन की कलियाँ खिलेंगी नहीं
कृष्ण की कुंज गलियां मिलेंगी नहीं
आजकल में समय बीत जाने को है
मन भजन में रहो...........

64. तेरा जीवन बिरथा बीत गया

तेरा जीवन बिरथा बीत गया
संसार में सार बिसार दिया शुभ कर्मों के विपरीत गया

माया ने मूरख तुझे छला तू जग से खाली हाथ चला
पुण्यों की पूंजी खत्म हुई है पाप जुए में जीत गया
तेरा जीवन बिरथा......... ॥ 1 ॥
जो प्यार प्रभु से कर लेता तो वह दुख तेरे हर लेता
अब दु:ख का अवसर आने पर सुख का सुन्दर संगीत गया
तेरा जीवन बिरथा......... ॥ 2 ॥

65. भज मन श्री कल्कि नारायण

भज मन श्री कल्कि नारायण।
बिखरेगी यह काया एक दिन पंछी उड़ जाएगा।

बेबस होकर मौत का कोड़ा जिस दम तू खाएगा॥
उस मौके पर कोई तेरे काम नहीं आएगा।
भज मन श्री कल्कि नारायण··· ॥ 1 ॥

टूटेगी जब श्वाँस सुमरनी करनी दोहराएगा।
कह न सकेगा कुछ आँखों में आँसू भर लाएगा॥
भज मन श्री कल्कि नारायण··· ॥ 2 ॥

क्या संग लाया था जब आया क्या संग ले जाएगा।
झूठी माया में भरमाया पीछे पछताएगा॥
भज मन श्री कल्कि नारायण··· ॥ 3 ॥

लिखने वाला तो लिख देगा जो तू लिखवाएगा।
जैसी तेरी करनी होगी वैसा फल पाएगा॥
भज मन श्री कल्कि नारायण··· ॥ 4 ॥

66. मतवाले हरि गुन गा ले

मतवाले हरि गुन गा ले जब टूटे श्वाँस सितार रे
तेरे काम न आए यह दुनियां......
क्या संग लाया था जब आया था क्या संग ले जाएगा
झूठी माया में भरमाया पीछे पछताएगा
तेरे घरवाले बाहरवाले सब सुख में साँझीदार
तेरे काम न आए यह दुनियां...... ॥ 1 ॥

जग में शुभ कर्मो की खेती कर, परलोक बनाना
जीवन का उद्देश्य नही है,खाना पीना मौज उड़ाना
तेरे घरवाले बाहरवाले सब मतलब का संसार
तेरे काम न आए यह दुनियां...... ॥ 2 ॥

67. मन कल्कि कल्कि गाया कर

मन कल्कि कल्कि गाया कर।
श्री कल्कि ही अब आएँगे
जो दु:खों के बादल छाए हैं।
दिन अन्तिम उनके आए हैं॥
दु:ख जाएंगे सुख आएंगे।
तुझे नाथ स्वयं अपनाएंगे।
मन कल्कि कल्कि गाया कर॥
जो पापी पाप बढ़ाएंगे।
वह निश्चय काटे जाएंगे॥
भूमि का भार हटाने को।
श्री कल्कि खड्ग चलाएंगे॥

68. तुम कल्कि कल्कि बोलो

तुम कल्कि कल्कि बोलो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे
क्यों पड़े नींद में सोते
क्यों समय अकारथ खोते
अब कल्कि नाम संग हो लो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

पापों की गहरी खाई
क्या देती नहीं दिखाई
अब मन की आँखें खोलो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

यह जीवन है दो दिन का
कुछ पता नहीं इस तन का
अपने पापों को धो लो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

मन कहे उसे मत मानो
कल्कि सुमरन की ठानों
दर्शन के चिन्तक हो लो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

69. अरे ओ मूढ़ बन्दे देख

अरे ओ मूढ़ बन्दे देख दुनिया जाने वाली है
इकट्ठे पाप करके इसने एक गठरी बना ली है

यही वह चलता पानी है यही वह बहती धारा है
जो अपने साथ में सबको बहा ले जाने वाली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे··· ॥ 1 ॥
निकल इस जग के फंदे से लगन रख कल्कि प्यारे से
जिन्होंने जालिमों के फूंकने को आग बाली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे··· ॥ 2 ॥
कभी था वह धनुष कर में कभी थी बांसुरी मुख पे
उन्होंने म्यान से तलवार हाथों में उठा ली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे··· ॥ 3 ॥
रटा था नाम कल्कि का गुरुवर बालमुकुन्दजी ने
जिन्होंने कल्कि मंडल देहली की नींव डाली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे··· ॥ 4 ॥

70. मस्त होकर जिन्दगी भर

मस्त होकर जिन्दगी भर नाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का
मौत के डर से अगर तू चाहता है छूटना
तो अमर कर देने वाला जाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का··· ॥
मस्त होकर जिन्दगी भर............1 ॥
बात दुनियाँ की न सुन ना देख दुनियाँ की तरफ
तू उम्मीदों से भरा पैगाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का··· ॥
मस्त होकर जिन्दगी भर...........2 ॥
पा लिया प्रहलाद ने जिस को भजन के जोर से
जो ध्रुव को था मिला वह धाम ले भगवान का

है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का… ॥
मस्त होकर जिन्दगी भर............3 ॥

71. बढ़ता चल जीवन में प्रति पल

बढ़ता चल जीवन में प्रति पल गन्तव्यस्थल दूर नही
आगे एक अवधि आने पर समय रहेगा क्रूर नहीं
दुख में साहस हीन हुआ तो लक्ष्य न अपना पाएगा
पूर्व पुण्य मय संचित निधि से वंचित ही रह जाएगा
कुटिल भाग्य से हंसकर कह दे धैर्यवान को घूर नहीं
बढ़ता चल जीवन में प्रति पल… ॥ 1 ॥
कुसुम कली कांटों में खिलती नित नूतन अनुराग लिये
चन्दन शीतल सुरभित रहता है संग विषधर नाग लिये
दुख में जो घबराया कायर कहलाया वह शूर नहीं
बढ़ता चल जीवन में प्रति पल… ॥ 2 ॥

72. गोकुल की गलियों में ढूंढे

गोकुल की गलियों में ढूंढे राधा को साँवरिया।
राधे राधे मीठी धुन में बोले री बांसुरिया॥

मुख सुन्दर कजरारे नैना घूंघर वाले बाल हैं
मोर मुकुट है सिर पर संग में गौऐं गोपी ग्वाल हैं
गल मूंगे की माला कंधे काली है कामरिया
गोकुल की गलियों में… ॥ 1 ॥

मधुवन की कुञ्जों में उलझी बांकी चितवन श्याम की
मनमोहन की दासी बन गई हर ग्वालन बिन दाम की

सब मिल घेरे छलिया को ज्यों चन्दा को बदरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 2 ॥

त्रिभुवन की आँखों का तारा रंग बरसाए रास का
बृज की रज में सागर उमड़ा आनन्द और उल्लास का
मन की लहरों में लहराए जीवन की चुनरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 3 ॥

ब्रह्मादिक सुर सारे खो गए नट-नागर के खेल में
नारदजी भी रूप बदल कर मिल गए सब के मेल में
बन गए भोले शंकर भी बरसाने की गूजरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 4 ॥

एक अनोखा जादू देखा मुरली के संगीत में
जड़ चेतन सब तन्मय हो गए नन्द नन्दन की प्रीत में
सुर बालाओं ने सिर धर ली गोरस की गागरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 5 ॥

जो तुम पाना चाहो जग में दर्शन सुन्दर श्याम का
तो कलियुग में कर लो मन से सुमरन कल्कि नाम का
भक्तों की भवसागर से तर जाएगी नावरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 6 ॥

73. खिला फूल उपवन में टूटा

खिला फूल उपवन में टूटा एक पवन के झोंके से
धरती पर गिर पड़ा मिला मिट्टी में रुका न रोके से
बिखर गए सब पंख रहा ना रूप रंग और आकर्षण
आया कुछ दिन ठहर न पाया लाया क्षण भंगुर जीवन

किसने किया प्रहार न जाने कोमल तन पर धोखे से
धरती पर गिर पड़ा मिला मिट्टी में रुका न रोके से
खिला फूल उपवन में टूटा··· ॥ 1 ॥
जिसको कल आँखों ने देखा उसका आज निशान नहीं
फिर भी अपने और पराए की होती पहचान नहीं
इस जग में कोई बिरला ही लाभ उठाए मौके से
खिला फूल उपवन में टूटा··· ॥ 2 ॥

74. एक राम है अपना सुन्दर श्याम है

एक राम है अपना सुन्दर श्याम है अपना
एक राम है अपना श्याम है अपना हार नहीं
राम का होके कोई रहा लाचार नही.....
श्री राम का होके कोई रहा
है तेरा कृष्ण कन्हैया तू छोड़ दे उस पे नैया
ना बेड़ा डूब सकेगा जब होगा राम खेवैया
कर प्यार उसी से और किसी से प्यार नहीं
राम का होके कोई रहा लाचार नही.....
एक राम है अपना सुन्दर श्याम है अपना
घट में उसको बैठा ले और जो चाहे सो पा ले
वो दाता जग निर्माता मुख से उसके गुण गाले
आधार वो सबका उसका कोई आधार नहीं
राम का होके कोई रहा लाचार नही.....
एक राम है अपना सुन्दर श्याम है अपना

75. गाए जा कल्कि नाम प्यारा

गाए जा गाए जा गाए जा गाए जा कल्कि नाम प्यारा
गाए जा गाए जा गाए जा........................
संसार के सुखों में जो लिप्त हो रहे हैं
अनमोल से समय को वो व्यर्थ खो रहे हैं
गाएंगे गुण प्रभु का पाएंगे सुख अनोखा
सुमरन में है सच्चाई संसार में है धोखा
गाए जा गाए जा गाए जा........................
जो हम भजन से अपना जीवन सुधार लेंगें
कल्कि प्रभु हमारे हमको उबार लेंगें
गाएंगे गुण प्रभु का पाएंगे सुख अनोखा
सुमरन में है सच्चाई संसार में है धोखा
गाए जा गाए जा गाए जा........................

76. कल्कि नाम के हीरे मोती

कल्कि नाम के हीरे मोती मै बिखराऊं गली-गली
ले लो ले लो कल्कि के प्यारो शोर मचाओ गली-गली
कल्कि नाम कल्कि नाम कल्कि कल्कि भज ले नाम

माया के दिवानो सुन लो एक दिन ऐसा आयेगा
धन दौलत और माल खजाना यही पड़ा रह जायेगा
सुन्दर काया मिट्टी होगी चर्चा होगी गली-गली
ले लो ले लो कल्कि के प्यारो शोर मचाओ गली-गली

क्यों तू करता मेरा मेरी यहाँ तो तेरा मकान नही

झूठे जग मे फंसा हुया है वो सच्चा इंसान नही
जग का मेला दो दिन का रे अंत मे होगी चला चली
ले लो ले लो कल्कि के प्यारो शोर मचाओ गली-गली

जिन जिन ने ये मोती लूटे वो तो मालामाल हुये
जो दौलत के पीछे भागे आखिर मे कंगाल हुये
जिन जिन ने ये मोती लूटे वो तो मालामाल हुये
जिसने हरि को न पूजा वो आखिर मे बेहाल हुये
चाँदी सोने वालो सुन लो बात सुनाओ खरी-खरी
ले लो ले लो कल्कि के प्यारो शोर मचाओ गली-गली

दुनिया को तू कब तक बंदे है अपनी बतलायेगा
तू कल्कि को भूल गया तो अंत समय पछतायेगा
दो दिन का ये चमन खिला है फिर मुरझाये कली कली
ले लो ले लो कल्कि के प्यारो शोर मचाओ गली-गली
अर्जुन को जब मोह ने धेरा तब प्रभु ने उपदेश दिया
ज्ञान की ज्योति ऐसी जगाई संशय सारा दूर किया
जिस प्रकार से हरि भक्तो ने कल्कि जी को पाया है
और कल्कि ने अपने भक्तो को देखो अपनाया है
गीता वेद और रामायण का सार सुनाओ गली-गली
ले लो ले लो कल्कि के प्यारो शोर मचाओ गली-गली

77. जो हरि सुमरन करता है

जो हरि सुमरन करता है दुष्कर्मो से डरता है
वो भक्तवर होकर निडर भव सागर से तरता है
सुर दुर्लभ नर काया पाकर माया में भरमाये

जन्म मरण न छूटे लख चौरासी चक्कर खाये
दुख पाए बार-बार
धन्य जीव जो इस धरती पर भक्त हो विचरता है
वो भक्तवर होकर निडर भव सागर से तरता है
जो हरि सुमरन करता है.................
भक्तों के कारण भगवान स्वयं धरती पर आए
राधव माधव नरहरि कल्कि वामन बुद्ध कहाए
हरने को भूमि भार
धन्य जीव जो शुद्ध हृदय में भक्ति भाव भरता है
वो भक्तवर होकर निडर भव सागर से तरता है
जो हरि सुमरन करता है.................

78. सिर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए

भावार्थ: प्रस्तुत भजन का भावार्थ करने की न तो हमारी क्षमता है, और न ही कुछ पक्तियों में इसका भावार्थ हो सकता है। ये तो एक श्रद्धांजली है उन वीर योद्धाओं को, जिन्होंनें कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने देश और धर्म की गरिमा को खंडित नही होने दिया॥ ऐसे वीर पुत्रों को पाकर हमारी मातृ-भूमि धन्य है। साथ ही उन वीर माताओं की कोख को भी शत् शत् नमन जिन्होंनें ऐसे महावीरों को जन्म दिया। जैसे कि कहा भी गया है

जननी जने तो भक्तजन या दानी या शूर
इससे तो तू बांझ भली व्यथा गवाये नूर

भावार्थ तो यहाँ स्पष्ट ही है, कुछ कहने की जरूरत नहीं,संक्षेप में इन वीरों के बारे में कुछ जरूर कहना चाहेंगें। वीर हकीकत राय ने मुस्लिम बच्चों द्वारा दुर्गा जी के अपमान पर आपत्ति जताते हुए कहा था कि अगर हम बीबी फातिमा के बारे में ऐसा कहे तो आपको कैसा लगेगा। उनके मुसलमान शिक्षक ने दंड के तौर पर हकीकत राय को या तो मुस्लिम धर्म अपनाने को या प्राण दंड स्वीकार करने को कहा। उस वीर बालक ने प्राण दंड स्वीकार किया लेकिन धर्म नहीं बदला। वीर शिवाजी ने मात्र सोलह वर्ष की आयु में, मुगलों से लोहा लिया और अपनी माता के कहने पर किला जीत लिया था। महाराणा प्रताप ने सारी

जिंदगी मुगलों से युद्ध किया। पहाडों की कंदराओं में रहे,घास की रोटियां खाई लेकिन कभी भी मुसलमान शासक अकबर के सामने सिर नहीं झुकाया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के नाम से कौन परिचित नहीं। बचपन से ही उनका एक सपना था अंग्रेजों को अपने देश से बाहर निकालना। राज परिवारों में जन्में ये लोग विलक्षण प्रतिभा के धनी, चाहते तो सुख का जीवन जी सकते थे। लेकिन इन्हें देश भक्ति की घुट्टी इन्हें बचपन में ही दे दी गयी थी। ऐसे न जाने कितने ही देश भक्तों के बलिदानों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। हमारी मातृभूमि ऐसे वीरों को पाकर गर्वित है। कल्कि भगवान भी कलियुग के इस साम्राज्य में सेंध लगाने अपनी कल्कि सेना के साथ आ रहे है और चार लाख बत्तीस हजार की आयु वाला यह कलियुग मात्र पाँच हजार वर्षों में यानि अपनी बाल्यावस्था में ही पलायन कर जाऐगा।

सर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए

यह कहकर शहीद हो गया वीर हकीकत राय
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए.......
देश की खातिर राणा प्रतापी घास की रोटी खाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए.......
देश की खातिर वीर शिवाजी मुगलों के छक्के छुड़ाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए.......
देश की खातिर रानी झांसी फिरंगी मार भगाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए.......
देश की खातिर बंदा बैरागी तिल-तिल तन कटवाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए.......
धर्म की खातिर लंका में अंगद अपना पैर जमाए
मेरा हिन्दू धर्म न जाए सिर जाए तो जाए मेरा हिन्दू धर्म न जाए.......

79. हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में कवि श्री कल्कि भगवान का आवाहन करते हुए करते हुए कह रहे है कि हे प्रभु चारों ओर घोर अंधेरा छाया हुआ है। कलियुग ने

अत्याचारों की सब सीमाएं पार कर दी है। अब तो कलियुग को दंड देने अश्व पर चढ खड्ग हाथ में लेकर आ जाइये। अपने भक्तों की पुकार पर तो आप हमेशा आते है। द्रौपदी का चीर आपने बढ़ाया, और उसके सम्मान की रक्षा की,पत्थर बनी अहिल्या का आपने उद्धार किया, मीराबाई के विष के प्याले को अमृत में बदल दिया, सूरदास को ग्वाला बन दर्शन दिये। फिर क्यों आप हमारी पुकार नहीं सुन रहें है। हमें भी अपने दर्शन देकर कृतार्थ कीजिए, और भाग्यवान से महा भाग्यवान बनाइये।

हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा
है तुम बिन दूर सवेरा हे देवता
हे देवता उद्धार करो अब मेरा
हूँ दीन दुखों ने घेरा
हे देवता कलियुग में श्री कल्कि कहलाना होगा
खड़ग लिए चढ़ घोड़े अब आना होगा
हे देवता द्रुपद सुता की तुमने लाज बचाई
तारी अहिल्या और मीरा बाई
हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा है
तुम बिन दूर सवेरा हे देवता..........
सूरदास को दरश दिया गोकुल का ग्वाला बन के
मेरी आँखो के आगे भी आओ उजाला बन के
हे देवता छाया घनघोर अन्धेरा है
तुम बिन दूर सवेरा हे देवता.............

80. पुकारे नहीं सुन रहे गाय की

पुकारे नहीं सुन रहे गाय की,
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया
तुम्हीं से पली लाडली का यहाँ,

तुम्हारे बिना हाल क्या हो गया
हुई आज असहाय घर-घर जिसे,
मिला मान सम्मान मां की तरह
अधम आततायी उसी गाय की,
लगे खींचने खाल क्या हो गया
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की,
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया...
न थी कल्पना राम के देश में,
मचेंगी अनाचार की आंधिया
प्रजातंत्र की आड़ में न्याय का,
कलंकित हुआ भाल क्या हो गया
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की,
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया...
विदेशी हटे दास उनके डटे,
उसी को सभी मान बैठे स्वराज
किया क्या नरक से निकाला हमें
बड़े नरक में दिया डाल क्या हो गया
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की,
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया...
यहां अब न माखन यहाँ अब न घी,
यहाँ अब न नदियाँ बहे दूध की
न नौ लाख गौवें यहाँ नन्द की,
न बृज के यहाँ ग्वाल क्या हो गया
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की,
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया...
कदम्ब तरु लताए सघन कुंज वन,
मधुर बांसुरी की न स्वर लहरिया

न सरसिज न सर श्याम सुंदर न तुम,
विरह की मची ज्वाल क्या हो गया
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की,
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया...
तुम्हें या स्वयं को कुटिल भाग्य को,
समय को कि युग को किसे दोष दें
सरल साधु समुदाय के रक्त से,
धरा क्यूँ हुई लाल क्या हो गया
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की,
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया...
समुन्दर न खौले न धरती फटी,
दिशाएं न दहकी न दानव फुंके
गिराई न आकाश ने बिजलियां,
बने तुम न विकराल क्या हो गया
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की,
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया...
न तलवार थामी न घोड़े चढ़े,
बड़ी देर की क्यूँ न कल्कि बने
उठो हे महाकाल संहार की,
घड़ी क्यों रहे टाल क्या हो गया
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की,
तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया...
बजी क्यूँ न घनघोर रण भेरियां,
घिरी क्यूँ न अब तक घटा युद्ध की
फटा क्यूँ न परदा प्रबल पाप का,
कटा क्यूँ न कलिकाल क्या हो गया
पुकारे नहीं सुन रहे गाय की, तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया...

81. तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया

तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया बुला रही है तुम्हारी गाय
तुम्हीं को अपनी करूण कहानी सुना रही हैं तुम्हारी गाएं
वो गाय तुमने जिसे चराया चरा के गोपाल नाम पाया
क्यूँ आज असहाय हो के आँसू बहा रही है तुम्हारी गाय
तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया बुला रही है
तुम्हारी गाय............

कहाँ वो मुरली की मीठी तानें कहाँ वो बृजवन सघन सुहाने
गए जमाने की याद तुम को दिला रही है तुम्हारी गाय
तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया बुला रही है
तुम्हारी गाय................

उठालो अब हाथ में दुधारा दिखा दो वो कल्कि रूप प्यारा
तुम्हारे दर्शन की आस तुम से लगा रही है तुम्हारी गाय
तुम्हें कन्हैया हलधर के भैया बुला रही है
तुम्हारी गाय................
तुम्हीं को अपनी करुण कहानी सुना रही है तुम्हारी गाय......

82. देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए

देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए
आ रहे हमारे कल्कि खड़ग उठाए
हाहाकार मची चौतरफा पल पल भारी आए
जो कल्कि का नाम जपेगा वह कल्कि मन भाए

देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए.......................
त्रेता में श्री राम हुए द्वापर में कृष्ण कहाए
कलियुग में भी जन्म लिया है सत्युग करने आए
देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए.....................
दुनियां वाले मोह माया में मन को रहे लगाए
माया सारी यहीं रहेगी जीव नरक को जाए
देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए.........................
कल्कि मण्डल निशदिन मिलकर कल्कि के गुण गाए
छोड़ सभी दुनियां के धन्धे प्रभु को शीश नवाए
देखो देखो जी जगत के सिर पर काल मंडराए......................

83. लगे रहो कल्कि के प्यारों

लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग की तैयारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग...
परम उपासक कलि कुल नाशक पद्मापति सुखधाम के
धन्य तुम्हारा जीवन जो हरि हाथ बिके बिन दाम के
खर शूकर सम जीयें जगत में वे नर हैं किस काम के
बहुत बड़ा है अन्तर तुम में और पुरुष संसारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग...
उतरेगा भू-भार तुम्हारे कल्कि कल्कि कहने से
हो जाओगे अमर धर्म के कारण संकट सहने से
सुख पाएगा मन कल्कि के चरण कमल में रहने से
डूबे कल्कि नाम बिना नर भव सागर में बहने से

नेह तुम्हारा बढ़े निरन्तर निष्कलंक अवतारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग···

जग में जिनके परम सहायक गुरुवर बालमुकुन्द हैं
वे चट्टान समान सुदृढ़ संताप रहित स्वछन्द हैं
कल्कि के अनुभव से उनके उर में अति आनन्द हैं
क्या देखें कल्कि की लीला जिनकी आँखे बंद हैं
जीव भजन बिन पल्लव सब उड़ते अंधड़ अंधियारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग···

कल्कि नाम सुनेंगे तुमसे संस्कारी बल पाएंगे
भक्त रहेंगे संग प्रमादी पाखण्डी टल जाएंगे
व्याकुल होकर दशो दिशाओं में दानव दल धाएंगे
शुभ कर्मों के आज नहीं तो कल आगे फल आएंगे
नहीं रहेंगे विप्र धेनु सुर संत सदा लाचारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग···

दिव्य लोक से तुम्हें भुवन पति ने भूतल पर भेजा है
क्या जानो किसलिये तुम्हारा रूप बदलकर भेजा है
कलियुग से टक्कर लेने को किसके बल पर भेजा है
केवल कल्कि नाम न भूलो जिसके बल पर भेजा है
काल समाया है कलियुग का कल्कि नाम दुधारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग···

काम लगन से कल्कि का जो तन रहते कर लेंगे
ध्यानावस्थित हो कल्कि के चरणों में सिर धर लेंगे
कथा सुनेंगे श्रवण नयन हरि के हित झर-झर लेंगे

उनके अगले पिछले पातक कल्कि पल में हर लेंगे
देंगे स्थान उन्हें सत्युग के अग्रिम दल दरबारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग...
जो जन धन वैभव के मद में कल्कि नाम को भूलेंगे
दर्पण में प्रतिबिम्ब देख निज सुन्दरता पर फूलेंगे
मन विहंग आकांशाओं के विस्तृत नभ को छु लेंगे
पछताएंगे प्राण मृत्यु के झूले में जब झूलेंगे
सुख चाहो तो रमो रमापति पद पंकज मदहारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग...
कह दो सब से कल्कि जी का खड़ग खड़कने वाला है
शंकर का विकराल तीसरा नेत्र फड़कने वाला है
शीशे सम कलियुग का तन तत्काल तड़कने वाला है
अखिल विश्व में भीम भयंकर युद्ध भड़कने वाला है
कौन सुनेगा अमन शांति का नारा मारामारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग..

84. देखे कब होता है पूरा वादा मुरली वाले का

देखें कब होता है पूरा वादा मुरली वाले का
रात दिना बैठे तकते हैं रस्ता सम्भल वाले का
वादा मुरली वाले का वादा बंसरी वाले का
देखे कब होता है पूरा............................

हिरण्यकश्यप प्रह्लाद को सब डर दिखा कर थक गया
मारने को उसने ऐसा तप्त खम्बा था किया
एक चींटी चल रही थी खम्ब पर उल्लास से
देखते ही भक्त ने भगवान का सुमरन किया
खम्बे से लिपटा वो लेकर नाम मुरली वाले का
देखे कब होता है पूरा ....
पांडवों को सभा में नीचा दिखाने के लिये
द्रौपदी लाई गई सत से डिगाने के लिये
लाचार नारी रो उठी रो-रोके यूं कहने लगी
हे नाथ आओ लाज अबला की बचाने के लिये
तन से अलग हुई न साड़ी सत था मुरली वाले का
देखे कब होता है पूरा ....

85. सागर में नैया डग-मग डोले

भावार्थः प्रस्तुत भजन में लेखक का सागर से अभिप्राय संसार रूपी भवसागर से है। वो कहते हैं कि हे प्रभु इस संसार रूपी सागर में मेरी नैया डांवाडोल हो रही है। मेरी इस डोलती नैया के खिवैया बन जाओ। मेरी आत्मा भी यही पुकार कर कह रही है कि आप ही मुझे इस मंझधार से निकालकर पार करोगे।

सागर में नैया डग-मग डोले
पड़ के भंवर बीच खाए झकोले
मँझधार में कोई चारा नहीं है
आँखों के आगे किनारा नहीं है
ऐसे में जीवन सहारा टटोले
सागर में नैया डग-मग डोले॥ 1॥
हे कृष्ण केशव कन्हैया कहाँ हो
मेरी नैया के खिवैया कहाँ हो

बोलूँ न मैं आत्मा मेरी बोले
सागर में नैया डग-मग डोल

86. मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में लेखकने कहा हैं कि हे कल्कि प्रभु मुझे सांसारिक सुखों की कामना नहीं है, मैं इस माया रूपी संसार से मुक्त होना चाहता हूँ। मेरी इस देह में बसकर मेरे रोम रोम को पवित्र कर दो। स्वयं शिव भी समाधि में आपके जिस रूप का ध्यान करते हैं और महर्षि वेदव्यास भी आपकी जिस महिमा को गाते हैं, मेरी आँखों में आपका वही स्वरूप बस जाए मेरी जिव्हा भी आपका ही गुण गाए। मेरे मन को भी वही मोड़ दो।

मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए
मुझे भक्ति भाव में छोड़ दो
मेरी आस मेरी लगन के संग
श्री कल्कि नाम को जोड़ दो
रहे मेरी आँखों में रूप वह
जिसे शिव समाधि में धारते
पड़े मेरे कानों में हरि कथा
जिसे व्यास आदि उचारते
रटे मेरी रसना तुम्हें सदा
मेरे मन को विषयों से मोड़ दो
मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए॥ 1॥
मेरे रोम-रोम में तुम रमो
तो यह देह मेरी पुनीत हो
मेरे स्वामी मात-पिता हो तुम
तुम्हीं बन्धु हो मेरे मीत हो
मेरे तुम से नाते बने रहें
चाहे नाते दुनियाँ से तोड़ दो
मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए॥ 2॥

87.श्री दुर्गा स्तुतिः

जय गणपति गुरु देव शिवाशिव शेष शारदा
माँ दुर्गे हम करते तुम्हें प्रणाम सर्वदा
रौद्र रूप दृग अरुण विशेष क्रोध के कारण
भक्त त्राण हित अस्त्र शस्त्र करती हो धारण

अखिल भुवन में है भर रहा प्रकाश तुम्हारा
रहे भगवती मम उर मध्य निवास तुम्हारा
तुम होकर अवतरित किया करती हो क्रीड़ा
भू-भूसुर-सुर सन्तों की हरती हो पीड़ा

निशि दिन जो जन तुमको भजे अनन्य भाव से
छूटे सद्य त्रिताप पाप के दुष्प्रभाव से
भक्ति मुक्ति देती है आराधना तुम्हारी
पूर्ण करो अविलम्ब देवि कामना हमारी

भक्त वत्सला भव्या भव मोचनी भवानी
गुण गाते गन्धर्व सर्व सुर नर मुनि ज्ञानी
होकर श्रद्धा युक्त शरण में जो आता है
वह सुर दुर्लभ नित्य परम पद को पाता है

करे तुम्हारा यजन जीव जो तन मन धन से
उन्हें मुक्त करती हो माया के बन्धन से
नाश करो माँ मेरे अज्ञानांधकार का
हो निर्मल मन रहे न उर अंकुर विकार का

प्राप्त किया तुम से अखण्ड साम्राज्य सुरथ ने
किसे न किया कृतार्थ भक्ति के पावन पथ ने
जब समाधि ने देवी तुम्हारा ध्यान किया था
तुमने उसको सबसे उत्तम ज्ञान दिया था

दो वरदान मुझे मैं होकर युक्त धर्म से
बनूँ कल्कि कमलेश भक्त मन वचन कर्म से
अपने जन को दिव्य शक्ति संपन्न करो माँ
परम शन्ति सुख देकर चित्त प्रसन्न करो माँ

सात्विक बुद्धि प्रदान करो कलि कलुष हटाओ
मम रसना से पल पल कल्कि नाम रटाओ
व्यापक है तव तेज भूमि पाताल व्योम में
जड़ चेतन संपूर्ण सृष्टि के रोम रोम में

प्रिय है तुमको वेद धर्म मर्यादा पालन
मर्यादा से होता लोकों का संचालन
वसुधा पर जब दैत्य दुष्ट दल बढ़ जाते हैं
बल वैभव के उच्च शिखर पर चढ़ जाते हैं
वे मदान्ध हो करते जब उपहास तुम्हारा
अखिल विश्व तब बन जाता है ग्रास तुम्हारा
होती हो तुम तृप्त रक्त असुरों का पीकर
गेंद समान गिराती हो नर मुण्ड मही पर

असुर शवों से जब यह पृथ्वी पट जाती है
तभी पाप की गहन कालिमा हट जाती है
चलती है जब क्रूर कठिन करवाल तुम्हारी

सौम्य मूर्ति बन जाती है विकराल तुम्हारी

अट्टहास कर माँ जिस बार गरजती हो तुम
युद्ध भूमि में क्रुद्ध सिंह पर सजती हो तुम
जब कि भार से शेष शक्ति घटने लगती है
जलनिधि जाते खौल धरा फटने लगती है

होती क्षितिज में लीन गगनचुम्बी चट्टाने
सकल सृष्टि को लगते ज्वालामुखी जलाने
महा मेघ सम्वर्त काल के दृश्य दिखाते
सप्त सिन्धु मर्याद हीन होकर लहराते

अति विक्षुब्ध प्रकृति के ध्वंसमयी तांडव से
भर जाती सम्पूर्ण दिशाएँ भीषण रव से
मार्तण्ड जब हो प्रचण्ड तपने लगते हैं
त्राहि त्राहि कर जीव तुम्हें जपने लगते हैं

देती हो तब आर्त प्राणियों को निज आश्रय
करती हो खल मलेच्छ यवन दल बौद्धों का क्षय
जय गणपति गुरु देव शिवाशिव शेष शारदा
माँ दुर्गे हम करते तुम्हें प्रणाम सर्वदा ॥

त्रैकालिक प्रार्थना

अनुभव के क्षीरसागर में महर्षि बालमुकुन्द/हनुमान जी के अवतार व पंडित लक्ष्मी नारायण/रामकृष्ण परमहंस के अवतार के साथ भक्तगण कलियुग नाशार्थ भगवान की त्रैकालिक प्रार्थना करते थे। सब से अनुरोध है कि प्रतिदिन कम से कम एक या दो बार सपरिवार या अकेले त्रैकालिक प्रार्थना अवश्य करें।

श्री गणेशजी महाराज को दण्डवत्। श्री गुरुजी महाराज को दण्डवत्। सरस्वती महारानी जी को दण्डवत्।

हे कल्कि भगवान! त्राहिमाम् त्राहिमाम्।

हिन्दू धर्म की लज्जा रखिये। विरद बाने की लज्जा रखिये। गौ ब्राह्मणों की रक्षा कीजिये। साधु संतों की रक्षा कीजिये। पृथ्वी की रक्षा कीजिये। देवताओं की रक्षा कीजिये, पालना कीजिये। राज्य सिंहासन पर विराजमान होइये। महासत्युग कीजिये। यज्ञ हवन करवाइये। पृथ्वी का भार उतार दीजिये।

हे शरणागत् वत्सल जल्दी सुधि लीजिए, पल भर की देर न कीजिए। त्राहिमाम् त्राहिमाम् गौ ब्राह्मणों की रक्षा कीजिये।

हे नाथ! अब आपके दरबारी सखा लोग अत्यन्त थक गए हैं। अब इनमें किसी प्रकार की सामर्थ्य नहीं रही। हे दीनबंधु, दीनानाथ अब इनकी जल्दी सुधि लीजिए। हमें गुरण्ड के ताप से बचाइए। हमारी विनती सहस्त्र कान करके सुनिए। बारह टोपी मलेच्छों का बीजनाश कर दीजिए। प्राचीन वाहन, भूषण, शक्ति, हथियार दरबारी सखा लोगों को दीजिए। खड्ग के जोर से इन्द्रप्रस्थ का तख्त आबाद कर दीजिए। चौतरफा के बन्द एकदम तोड़ दीजिये। चौतरफा

महाघोर संग्राम कर दीजिए। शीघ्र ही सारी पृथ्वी पर्यन्त के दुष्ट असुरों का बीजनाश कर दीजिए। हे नाथ! जब वाराह रूप धारण कर, हिरण्याक्ष को मार कर, पृथ्वी को डाढ़ा पर धर कर लाए और पृथ्वी को जल पर स्थापित कर तथा पृथ्वी पर प्रसन्न होकर बोले थे कि 'हे पृथ्वी, जब जब दुष्ट असुर तुझ पर उत्पन्न होकर महापाप करेंगे, तब तब मैं अवतार धारण कर तेरा भार एक दम उतार दूँगा।'

हे नाथ! जो वचन आप पृथ्वी को दे चुके हैं, उन वचनों की पालना कीजिए। जैसा घोर महापाप का भार इस समय है, वैसा भार न रामावतार में हुआ, न कृष्णावतार में हुआ, फिर आप क्यों नहीं प्रकट होते! सिवाय आपके किसकी सामर्थ्य है जो पृथ्वी का भार उतार सके, हमेशा आप ही भार उतारते आये हैं, अब भी आप ही भार उतारेंगे।

हे नाथ! जैसे आपने गज को ग्राह से बचाया, लाक्षाकोट में जलते हुए पांडवों को बचाया, कौरवों की सभा में द्रौपदी का चीर बढ़ाया, रुक्मिणी का प्रण पूरा किया, वैसे ही हे दीनबन्धु, दीनानाथ, शरणागतवत्सल कल्कि भगवान, इस घोर समय में हमारी सुधि लीजिए। रक्षा कीजिए। राज्य सिंहासन पर विराजमान होइए। महासत्युग कीजिए। यज्ञ-हवन करवाइए। पृथ्वी का भार उतार दीजिए। हे नाथ! अब आप जैसे सोते से जागे हैं; सारी पृथ्वी के दुष्ट असुरों का बीज नाश कर दीजिए। हे कल्कि भगवान! दुर्गादेवी महारानी जी को शीघ्र आज्ञा दीजिए जिससे सारी पृथ्वी के दुष्ट-असुरों का बीजनाश हो जाए। हे कल्कि भगवान्! आपने जो दृष्टान्त दिये हैं उन्हें अत्यन्त शीघ्र प्रत्यक्ष में सत्य कर दीजिए।

देवापि और मरु नाम के जो राजा आपके लिये तप कर रहे हैं उन्हें अत्यन्त शीघ्र बुलवाइये। हे कल्कि भगवान्! जितने भी आपके भक्त हैं उनके मन, बुद्धि, वाणी को अपनी तरफ लगा लीजिए। उनसे अपना काम लीजिए और उनको ऐसी दृष्टि दीजिए कि वे निर्भय होकर जीवन पर्यन्त आपका काम करें।

जय-जय श्री कल्कि भगवान् महाराज की जय हो।

भूमि के भार उतारन हारे की जय हो।

पद्मावती जी के पति महाराज की जय हो।

जगत्पति के पति महाराज की जय हो।

संभल सरकार स्वामी की जय हो।

खड्गधारी कृपाकारी श्रीकल्कि भगवान की सदा जय हो।

भारत वर्ष में गौ-वध बन्द कराने वाले की सदा जय हो।

पृथ्वी की गौवों की रक्षा करनेवाले

श्री कल्कि भगवान् की सदा जय हो।

निराकार ज्योति स्वरूप श्रीकल्कि भगवान् की सदा जय हो।

क्षीरसागरवासी श्रीकल्कि भगवान् की सदा जय हो।

हरिः ओ३म् तत् सत् (3 बार)

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च

जगद्धिताय श्री कृष्णाय श्री कल्कि रूपाय नमो नमः

मुक्तिदायिनी आरती

ॐ जय जय सुर रक्षक
असुर विनाशक पदमावति के प्यारे।
जय जय श्री कल्कि भक्त हितकारी दुष्टन मारन हारे॥
जय जय खड्गधारी, जय असुरारी गौ विप्रन के रखवारे।
क्षीरसागरवासी जय अविनाशी, भूमि भार उतारन हारे॥
जय कल्कि भगवान.........
अलख निरंजन भव भय भंजन जय संभल सरकारे।
भक्तजनों के पालनकर्ता, जय गऊन रखवारे॥
जय कल्कि भगवान.........
जय जयकार करत सब भक्तजन सुनिए प्राण पियारे।
वैगहि सुधि लेना मोरे स्वामी, हम सब दास पुकारें॥
जय कल्कि भगवान........
जय कल्कि भगवान

बार बरोबर बाढ़ है, तापर चलत ब्यार।
श्रीकल्कि पार उतारिए अपनी ओर निहार॥

कर्पूर गौरं करूणावतारम्
संसार सारम् भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा बसन्तम् ह्रदयारविन्दे
भवं भवानी सहितं नमामि॥

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत पहृष्यत्य अनुरज्यते च।
रक्षांसि भितानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्ध संघाः॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम् देव देव॥

दीनं हीनं सेवया वेद वत्या
पापै स्तापै पूरितं में शरीरं।
लोभाक्रान्तं शोक मोहादि विद्वं
कृपा दृष्ट्या पाहिं वासुदेवम्॥

पुष्पांजलि अर्पण करूँ ग्रहण करो महाराज।
कृपा दृष्टि अवलोकिए शरण गहे की लाज॥

(तीन बार पुष्पांजलि बोलते समय प्रत्येक बार मानसिक रूप से भगवान की पूरी परिक्रमा करें। ऐसा करने से परिक्रमा के फल से आप लाभान्वित होंगे)

हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डहा, दुष्टहा नाशनं पापहा

फल समर्पण

हे श्री कल्कि भगवान मैंने जो आपकी मुक्तिदायिनी आरती की है उसका संपूर्ण फल आपके श्रीचरणों में सादर समर्पित है इसे स्वीकार कीजिए। गऊ, विप्र, धर्म की रक्षा कीजिए। पृथ्वी की रक्षा कीजिए। कलियुग का नाश कीजिए। कलियुगी शक्तियों का नाश करके निरंतर दैवीय शक्तियों की सहायता दिलवाकर परेशानियों से निकलने का रास्ता दीजिए। हमें आपका कार्य करना है।

भगवान श्री कल्कि जी का भोग

राघव राजा राम तुम, माधव सुन्दर श्याम।
पूर्ण परात्पर कल्कि प्रभु, प्रतिपल तुम्हें प्रणाम॥

प्रथम करो प्रभु अर्ध्य ग्रहण, फिर पाद्य आचमन।
पंचामृत गंगा जल से हो, स्नान जनार्दन॥
धारण कर यज्ञोपवीत, नव वस्त्राभूषण।
पुष्प रत्न मणि माल, भाल मलयागिरि चन्दन॥
रवि सम दिव्य प्रकाशमय, सिंहासन स्वीकार हो।
भक्तों को पद्मा रमा, सहित साक्षात्कार हो॥

हो फिर भोजन, भोग लगे हे जन मन रंजन,
मन कल्पित नैवैद्य, सुधा सम बहुविधि व्यंजन।
स्वर्ण थाल में, कनक कटोरी धरी हुई है।
तुलसी दल युत, पकवानों से भरी हुई है।
सकल वस्तु स्वादिष्ट हैं, पाओ प्रभु विनती करें।
प्रति पदार्थ की यदि कहो, पल भर में गिनती करें।

है गुलाब जामुन, पिस्ते की लौज निराली।
मक्खन मिश्री, रबड़ी रसगुल्ला बंगाली।
खोए के लड्डू, रसभीनी मधुर मलाई।
मेवा वाली खीर, मखाने की बनवाई।
माल पुए मक्खन बड़े, हे मनमोहन लीजिए।
पेड़े बर्फी कलाकन्द, हलुआ सोहन लीजिए।

चमचम और खीर मोहन, खुरचन मनचाही।
रंगदार गुलदाना, बढ़िया बालूशाही।
पेठा फेनी, खजला खुर्मी और इमरती।
शक्कर पारे, मीठे सेब जलेबी नुकती।

मीठी गुंजियाँ खोए की, हलुआ है बादाम का।
घी में भीगा चूरमा, भोग लगे सुखधाम का।
हैं मठरी नमकीन, मसाले वाली गुंजिया।
पापड़ और पकौड़े, बीकानेरी भुजिया।
काजू घी में तले, और आलू का लच्छा।
सेब समोसे स्वाल, स्वाद सब ही का अच्छा।
तले मखाने मोगरे, और बीज सारे धरे।
मौन बड़ी संग मूंग की दाल, नमकपारे धरे।
मूंग और चावल के चिल्ले, घी में तर हैं।
श्रेष्ठ स्वाद में, और देखने में सुन्दर हैं।
फूली पूरी पिठ्ठी वाली, खरी कचौरी।
आलू की नमकीन बेड़मी, और नगौरी।
चटनी लौंजी मुरब्बे, चक्खो संग आचार के।
दही बड़े लो रायते, साग अनेक प्रकार के।
कटहल और कमल ककड़ी कचनार करेला।
सेम ग्वार की फली, सेंगरी कच्चा केला।
शिमले वाली मिर्च मटर है, गोभी आलू।
जिमीकन्द के संग कचालू और रतालू।
टिण्डा तोरी घिया के, संग सीताफल लीजिए।
भिण्डी अरबी बांकला, बथुआ परमल लीजिए।
सौंठ छुआरे वाली, और करौंदे कमरक।
हरी मिर्च मूली का लच्छा, नींबू अदरक।
आम दशहरी और सन्तरे, केले रक्खे।
पाओ प्रभु जिस भाँति भोग, भिलनी के चक्खे।
खिरनी और खूमानियाँ, खरबूजों के ढेर हैं।
लीची हैं लौकाट हैं, काले जामुन बेर हैं।

हैं अनार अमरूद, फालसे काले-काले।
काश्मीर के सेब, कसेरू मेरठ वाले।
कच्चे गोले अनन्नास, अंगूर धरे हैं।
मौसम्बी शहतूत सिंघाड़े, हरे हरे हैं।
आड़ू आलू बुखारे, चीकू और चकोतरे।
मीठे मीठे फलों के, भरे धरे हैं टोकरे।
लो पिस्ते बादाम, रमा पद्मा के प्यारे।
चिलगोजे काजू किशमिश, अखरोट छुआरे।
रबड़ी का कूंजा, शीतल गंगाजल पावन।

हाथ जोड़कर प्रार्थना करें हे श्री कल्कि भगवान यह मानसिक भोग लगाइए आपके अर्पण है। फिर ताली बजाकर आगे की पंक्तियाँ गाएं।

पान करो प्रभु और आचमन कर प्रक्षालन।
लौंग कपूर इलायची, युत उत्तम ताम्बूल लो।
स्वर्ण पत्र मंडित मधुर, सब विधि मन अनुकूल लो।

[illegible] ? किसके द्वारा हमें मिलता है ? जरा सी गलती होने पर कौन कैसे हमसे लेता है ? [illegible]

दैवीय शक्तियों की पोशाक में जेब नहीं होती
दैवीय शक्तियाँ हमें अपनी योगी योगिनियों से दिलवाती हैं
वायदा न निभाने पर
ऐसे योगी योगिनियाँ ठग कर ले जाती हैं

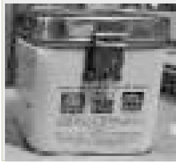

धनवान बनने व बने रहने की प्राचीन व सरल नियमावली

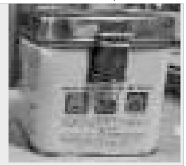

पहले लो

जैसे हमारे पूर्वज सनातन धर्म की मर्यादा अनुकूल
बही खातों में से धर्म का रुपया निकालते थे
वैसे अब कल्कि जी द्वारा प्रदान सरल नियमावली
से भाग निकालें आप निरंतर बढ़ते चले जाएंगे

फिर दो

यदि इस तरह की परेशानियाँ आ रहीं हो तो जरा सोचें कहीं आपसे गल्ती हो रही है क्योंकि कल्कि जी की नियमावली के अनुसार **योगी-योगिनियाँ** अपना शेयर इन रूपों में लेती हैं-बीमारी, डॉक्टर, अस्पताल, पुलिस, कोर्ट, कचहरी, पितृों द्वारा अचानक आग लगना, रुपए का रूकना या डूबना, टैक्स डिपार्टमेंट, घरेलू या व्यापारिक परेशानियाँ आदि।

परिवार-व्यापार-खुशहाली बढ़ाने हेतू कल्कि जी
द्वारा दी गई सरल नियमावली

शुभ का खजाना

शुभ के खजाने का 30% श्री कल्कि के साहित्य सृजन, मूर्ती स्थापना में अवश्य योगदान दे अथवा कही भी किसी भी कल्कि स्टोर से कल्कि साहित्य सामग्री खरीदकर व अपने उत्सवों जैसे जन्मदिन-सालगिरह-दीपावली-मंदिरो में दे देवे। बचा हुआ 70% कल्कि भगवान के विभिन्न कार्यों में लगाए जैसे घी, हवन सामग्री, कल्कि जी के महोत्सवों में जाने का किराया रिक्शा-स्कूटर-कार पेट्रोल आदि। इससे आपको घर में स्वच्छता व स्वास्थता मिलेगी। दवाइयों, अस्पताल व डॉक्टरों का बिल ना के बराबर होगा और व्यापार में चमक आएगी।

व्यापारी अपनी सेल (बिक्री) का.........................1%

(मुनाफा कम होने की स्थिति में 0.5%-0.2%-0.1% भी निकाल सकते हैं)

तन्खाह (सैलरी) का.....................5%

गृहणी मासिक घर खर्च का.........5%

प्रोजेक्ट मनी

विशेष : यह श्री कल्कि के मानने वालों के लिए है जिन्होंने उनकी कृपा पाई है और पा रहे हैं

मकान/दुकान/प्लॉट/बेचना-खरीदना....1%

विवादित-झगड़ेवाले-प्रापर्टी के बेचने खरीदने पर............................ 5%

सामान्य शादी होने का........................1%

शादी में मुश्किलें हो तो....................2%

शादी असम्भव हो रही हो तो............5%

गृहणी को जेवर सामान्य रूप में मिलने पर.......................................1%

गृहणी को जेवर जब मुश्किल से मिले..5%

गृहणी को जेवर नही मिलने के आसार पर...................................10%

गर्भावस्था (प्रेंग्नेंसी) के दौरान होने वाले खर्चे का...............................10%

बच्चों/बड़ो को मिली गिफ्ट का.........10%

ब्याज, डिविडेंड, किराए, इंश्योरेंस बोनस का..........................5%

प्रोजेक्ट मनी शुभ के डिब्बे में नहीं जाएगी न ही अपने हिसाब से खर्चें। यह श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन के समुद्र रूपी कलश में मिलेगी जहाँ से श्री कल्कि जी के साहित्य, मूर्ति स्थापना, कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं प्रचार के कार्य निरंतर हो रहे हैं। यदि आप भी अपनी प्रोजेक्ट मनी से यही कार्य करना चाहते हैं तो एक बार कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन के समुद्र रूपी कलश में मिलाकर उससे भी अधिक रुपया सुश्री पूर्णिमा अग्रवाल (9810135085), सुश्री इंदू बंसल (9818416191), सुश्री मुक्ता शर्मा (9811134378) की तरह हमारे प्रोजेक्ट प्रभारियों से ले लेवें।

संकल्प/शेयर मनी निकालते समय यह प्रार्थना करें:- हे कल्कि भगवान जो रुपया हम संकल्प कर के आपके प्रोजेक्ट कार्यों के लिए दे रहे हैं इसे स्वीकार कीजिए। गौ ब्राह्मणों धर्म की रक्षा कीजिए। सत्युग की स्थापना कर दीजिए, राजसिंहासन पर विराजमान हो जाइए। हमारी वैभवता को बनाए रखें हमें आगे बढ़ने के रास्ते दीजिए।

A/c No. of Shri Kalki Bal Vatika Foundation : 33515529809

II IFSC Code: SBIN0000631 II

State Bank of India, Chandni Chowk, Delhi-6

यह संस्था आयकर विभाग 12 में रजिस्टर्ड है। उक्त संस्था को दिया सहयोग (दान) 80₹ के अंतर्गत आपको आयकर मे 50% की छूट मिलेगी। बन पड़े तो जो रुपया आप बैंक में जमा करवा रहे हैं तो कृप्या अपना नाम, रुपया जमा करवाने की तारीख और राशि सुश्री सुषमा गोयल (9899698240) को मैसेज दे देवें।

Registered with the Registrar of Newspaper for India under Licence No. Delhi-N/2005/15596 Postal D.No. DL (DG-11)/8061/2021-2023
Posted at Delhi RMS. Delhi 110006
publication date 27-31 July मूल्य 10 रूपए posting date1-7 August अगस्त 2021

अवचेतन (सोते) दिमाग में डेरा गेरे भय- तनाव- फालतू की बातें

अब यह भजन संग्रह क्यों ? क्योंकि

"चाहे कितना ही तेजाधारी हो बिना भजन के मर जाएगा!
भजन-भजन भी कल्कि अवतार का"

- संवाद रेलवे स्टेशन मास्टर एवं श्री गुरूवर लक्ष्मी नारायण

बोलचाल की भाषा में भजन के दो प्रकार होते है-

पहला भजन: सुमिरन माला नाम जाप आदि से जिससे आत्मा को *शक्ति* मिलती

दूसरा भजन: लय-ताल-गायन मण्डली/मोबाइल/लैपटॉप/पेन ड्राइव आदि द्वारा (भजनों की रिकार्डिंग उपलद्बध सुश्री नेहा चौधरी 9778799577) सुनने से शरीर प्रफ्रल्लित होता है साथ ही साथ हमारे अवचेतन दिमाग (subconscious mind) में पढ़ें डर तनाव रूकें कामों की चिंता कम होनी शुरू हो जाती है। श्रोता स्वयं को तरोताजा हल्का सा महसूस करने लगता है। यही नहीं इसके अनेकों नेक फायदे हैं। जैसे-

□ अध्यात्मिकता को बल मिलना □ मन से संशय दूर होना
□ पाप कटने □ शांति एकाग्रता □ आत्मविश्वास के साथ स्वयम् से रास्ते मिलने आदि

श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन (रजि.)

Registration no. 3693/2013-14/4

उक्तसंस्था को दिया गया सहयोग (दान) 80 जी के अंतर्गत आपको आयकर में 50 प्रतिशत की छूट मिलेगी

1903, पहली मंजिल (कैन-कैन साऊंड सिस्टम) चांदनी चौक दिल्ली-6

हमारी सहयोगी संस्थाएं :
श्री कल्कि बाल वाटिका वैलफेयर ट्रस्ट कोलकाता (रजि.)
2 नंबर, हाईट रोड, लिलुआ हावड़ा-711204
9088162626

श्री कल्कि बाल वाटिका ट्रस्ट(रजि.)
6-3-787 शुभम अर्पाटमेन्ट, फलैट-708
पुनजागुट्टा आफीसर कॉलोनी
हैदराबाद 500016
9052882243

प्रकाशक द्वारा मुद्रित : योगेश प्रकाश गुप्ता, 1903/3 पहली मंजिल चांदनी चौक दिल्ली-110006
मुद्रक : लक्ष्मी प्रिंट इंडिया, 556, जी टी रोड शाहदरा-110003 संपादक : ओम प्रकाश गुप्ता
छठा संस्करण 3000 प्रतियाँ

Regd. office : 1903, 1st Floor, Chandni chowk, Delhi-6, Tel : 23973383